दैनिक

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

n वर्ष : 10 अंक : 169 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, सोमवार 14 जुलाई, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 1.50 रुपए ■ पृष्ठ : 8+2

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का कमाल : डेढ़ साल में कृषि कल्याण योजनाओं में नए कीर्तिमान

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान सरकार किसानों के सशक्तीकरण और कृषि क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित भाव से कार्य कर रही है। राज्य सरकार की ओर से किसानों की आय को दुगुनी करने के लक्ष्य को साकार करने के लिए तारबंदी, फार्म पौंड, सिंचाई पाइपलाइन और सूक्ष्म सिंचाई जैसी योजनाओं को ज़मीनी स्तर पर लागू किया गया है। राज्य सरकार की ओर से कृषकों के खेतों पर 32 हजार 164 फार्म पौंड का निर्माण करवाने के लिए अनुदान दिया गया है। जबकि गत सरकार के पूरे पांच साल में मात्र 29 हजार 430 फार्म पौंड का अनुदान ही दिया गया था। पिछले डेढ़ वर्ष में ही 7 हजार 465 डिग्गी निर्माण के लिए किसानों को अनुदान दिया जा चुका है। कुओं से खेत तक जल के अपव्यय को रोकने के लिए 25 हजार 787 किलोमीटर सिंचाई पाइपलाइन बिछाकर 53.89 करोड़ रुपये का अनुदान दिया गया। पाईपलाइन योजना में वर्तमान सरकार के डेढ़ साल में 77 हजार से अधिक किसानों को लाभान्वित किया जा चुका है जबकि पूर्ववर्ती सरकार के पहले डेढ़ वर्ष में 41 हजार 608 किसानों को ही इसका लाभ मिला था। जानवरों से फसलों की सुरक्षा के लिए 25 हजार 400 किलोमीटर तारबंदी कर 286 करोड़ रुपये का अनुदान वितरित किया गया। पूर्ववर्ती सरकार के पांच साल में 11 हजार 300 किलोमीटर तारबंदी के लिए ही अनुदान दिया गया था।

मृदा स्वास्थ्य से लेकर प्राकृतिक खेती तक, हर पहलू पर ध्यान

वर्तमान सरकार के कार्यकाल में 12.86 लाख मृदा स्वास्थ्य कार्ड किसानों को वितरित किए गए हैं। 37 हजार 911 वर्मी कंपोस्ट इकाइयां स्थापित कर प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दिया गया है। 50.87 लाख महिला कृषकों को नि:शुल्क बीज मिनी किट प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाया गया है।

फल बगीचों से नई खुशहाली की ओर

राज्य सरकार की ओर से संतरा, अमरूद, अनार, नींबू, आंवला और किन्नू जैसे फलों के 2 हजार 996 हैक्टेयर क्षेत्र में नए फल बगीचों की स्थापना करवाई गई है। इससे एक हजार 821 कृषकों को 6.35 करोड़ रुपये का अनुदान दिया गया है।

सौर ऊर्जा और ड्रिप सिंचाई से बढ़ा उत्पादन, घटा खर्च

राज्य सरकार की ओर से 41 हजार 690 सोलर पंप सेट स्थापित कर 650.95 करोड़ रुपये का अनुदान दिया गया है। एक लाख 40 हजार 217 हैक्टेयर क्षेत्र में ड्रिप और मिनी सिंप्रकलर पद्धति लागू कर 713.58 करोड़ रुपये तथा एक लाख 73 हजार 786 हैक्टेयर में स्प्रिंकलर सेट स्थापित कर 193.26 करोड़ रुपये का अनुदान किसानों को मिला है।

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा, गोवर्धन योजना से जैविक समृद्धि

मुख्यमंत्री की घोषणा के अनुसार बैलों से खेती करने वाले किसानों को 30 हजार रुपये प्रतिवर्ष अनुदान राशि दी जाएगी। गोवर्धन जैविक उर्वरक योजना के अंतर्गत गोवंश आधारित जैविक खाद उत्पादन के लिए प्रति कृषक 10 हजार रुपये की सहायता दी जा रही है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार की किसान केंद्रित योजनाएं केवल घोषणाएं नहीं हैं, बल्कि ज़मीनी हकीकत बनकर राजस्थान के किसानों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रही हैं। किसानों को उन्नत बीज, मृदा परीक्षण और कृषि यंत्रों पर अनुदान दिया जा रहा है। साथ ही, ई-नाम पोर्टल के माध्यम से बाजार तक बेहतर पहुँच सुनिश्चित की गई है। कृषि विभाग, अनुसंधान संस्थाएं और कृषि विश्वविद्यालय मिलकर किसानों को प्रशिक्षित भी कर रहे हैं। यह परिवर्तन अंत्योदय के उस दर्शन को साकार करता है, जिसमें अंतिम व्यक्ति की पीड़ा शासन की प्राथमिकता होती है।

संरक्षित खेती से बढ़ रही आय, ग्रीन हाउस और प्याज भंडारण की सुविधा

33.22 लाख वर्ग मीटर क्षेत्र में ग्रीन हाउस स्थापित कर एक हजार 24 कृषकों को 142.39 करोड़ रुपये का लाभ दिया गया है। 9 लाख 17 हजार वर्ग मीटर क्षेत्र में शेडनेट हाउस स्थापित कर 187 कृषकों को 25.20 करोड़ रुपये का अनुदान मिला है। 4 हजार 82 हैक्टेयर क्षेत्र में प्लास्टिक मल्?मल्चिंग अपनाकर 4 हजार 843 कृषकों को 7.64 करोड़ रुपये की सहायता मिली है। प्याज के भंडारण के लिए 2 हजार 100 प्याज भंडार गृहों की स्थापना कर 40.75 करोड़ रुपये का अनुदान दिया गया है।

राजस्थान सरकार की कैबिनेट और मंत्रिपरिषद की बैठक आज

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की अध्यक्षता में राजस्थान सरकार की कैबिनेट की बैठक सोमवार यानी 14 जुलाई को दोपहर 1 बजे मुख्यमंत्री कार्यालय में आयोजित की जाएगी, इसके बाद मंत्रिपरिषद की बैठक भी होगी. बैठक में बजट घोषणाओं की क्रियान्विति, मानसून से हुए नुकसान और जनसुनवाई जैसे अहम विषयों पर चर्चा होगी. सूत्रों के मुताबिक बैठक में आगामी विधानसभा सत्र की रणनीति, बजट घोषणाओं की प्रगति, सरकारी भर्तियों की स्थिति और विभागवार कार्ययोजनाओं की समीक्षा की जाएगी. विशेष ध्यान शिक्षा, स्वास्थ्य, खनिज और जल संकट से जुड़े प्रस्तावों पर रहने की संभावना है. इसके अलावा केंद्र सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन, और ग्रामीण विकास से जुड़े मुद्दे भी बैठक में रखे जा सकते हैं. कैबिनेट बैठक में हाल ही में प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में हुई भारी बारिश और ओलावृष्टि से हुए नुकसान की रिपोर्टिंग पर चर्चा होगी. मंत्रियों से उनके जिलों में हुए दौरों का फीडबैक भी लिया जाएगा, ताकि राहत और मुआवजा कार्यों को प्रभावी बनाया जा सके. मंत्रीपरिषद की बैठक में जयपुर में प्रस्तावित भाजपा कार्यालय में जनसुनवाई व्यवस्था की तैयारियों की समीक्षा भी होगी. मुख्यमंत्री का फोकस जनता से सीधा संवाद और फीडबैक पर है ऐसे में इसे एक मॉडल के रूप में विकसित किया जा सकता है. इसके अलावा जयपुर में आगामी दिनों में होने जा रहे राष्ट्रीय सहकारिता सम्मेलन को लेकर तैयारियों का ब्लूप्रिंट भी बैठक में प्रस्तुत किया जाएगा. इस आयोजन में केंद्रीय मंत्री अमित शाह सहित कई राष्ट्रीय नेता भाग लेंगे. सूत्रों का कहना है कि मंत्रिपरिषद की बैठक में कुछ रणनीतिक बिंदुओं पर भी विचार मंथन किया जाएगा. संगठनात्मक गतिविधियों और आगामी स्थानीय निकाय चुनावों को लेकर सरकार के रुख और प्राथमिकताओं पर चर्चा संभावित है. गौरतलब है कि मुख्यमंत्री ने हाल ही में सभी विभागों को निर्देश दिए थे कि बजट घोषणाओं का समयबद्ध और प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए।

सीएम भजनलाल के सख्त निर्देश: राजस्थान में जल्द शुरू होंगे खनिज ब्लॉक

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान सरकार खनिज ब्लॉकों को जल्द शुरू करने के लिए कमर कस रही है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में खान विभाग ने 16 जुलाई को जयपुर में एक महत्वपूर्ण कार्यशाला आयोजित करने का फैसला किया है। इस कार्यशाला में खान, भूविज्ञान, राजस्व, वन, पर्यावरण, भारतीय खान ब्यूरो स्टेट एनवायरमेंट इम्पैक्ट असेसमेंट अथॉरिटी और खनन से जुड़े बड़े निवेशक हिस्सा लेंगे। इसका मकसद खनिज ब्लॉकों को शुरू करने में आ रही अड़चनों को दूर करना और सभी जरूरी अनुमतियों को समय पर पूरा करना है।

मुख्यमंत्री ने दिखाई सख्ती

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि विभागों के बीच तालमेल की कमी के कारण नीलाम किए गए खनिज ब्लॉकों को शुरू करने में देरी हो रही है। वे चाहते हैं कि सभी विभाग एक साथ मिलकर काम करें ताकि प्रक्रिया तेज हो। इससे न केवल अवैध खनन पर रोक लगेगी बल्कि राज्य में निवेश बढ़ेगा, साथ ही रोजगार के नए मौके बनेंगे और सरकार को अधिक राजस्व मिलेगा। खान विभाग के प्रमुख सचिव टी. रविकान्त ने बताया कि राजस्थान देश में मेजर मिनरल ब्लॉकों की नीलामी में पहले स्थान पर है लेकिन इनके संचालन में देरी हो रही है। इसका कारण पर्यावरण मंजूरी, माइनिंग प्लान की स्वीकृति, वन भूमि हस्तांतरण और चारागाह भूमि परिवर्तन जैसी प्रक्रियाओं में समय लगना है। इस कार्यशाला में इन समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश होगी। माइंस निदेशक दीपक तंवर ने कहा कि कार्यशाला में प्रक्रियाओं की जानकारी देने के साथ-साथ निवेशकों और विभागों की समस्याओं को समझकर उनका हल निकाला जाएगा। यह खनन क्षेत्र में देश का पहला ऐसा समन्वित प्रयास है। कार्यशाला को सफल बनाने के लिए खान विभाग ने वरिष्ठ अधिकारियों की एक टीम बनाई है। अतिरिक्त निदेशक महेश माथुर निवेशकों के साथ समन्वय करेंगे। अधीक्षण अभियंता प्रताप मीणा विभागीय सहयोग सुनिश्चित करेंगे। संजय सक्सेना आयोजन स्थल की व्यवस्था संभालेंगे और श्याम कापड़ी जरूरी दस्तावेज तैयार करेंगे।

कोटा में दर्दनाक सड़क हादसा, 4 की मौत

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे पर हादसा, ट्रक में घुसी कार

जयपुर टाइम्स

कोटा(निस)।। कोटा में रविवार को सड़क हादसा हो गया। ड्राइवर को झपकी आने के कारण मिनी बस आगे चल रहे ट्रक में पीछे से घुस गई। इस हादसे में 2 सगे ज्वेलर भाई, उनकी मां और बहनोई (बहन के पति) की मौत हो गई। परिवार के 10 अन्य लोग घायल हैं। इसमें से 7 की स्थिति गंभीर है। दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे पर दुर्घटना रविवार सुबह कोटा (ग्रामीण) के दीगोद उपखंड इलाके में सुबह करीब 5 बजे हुई। ग्रामीण पुलिस अधीक्षक सुजीत शंकर ने बताया कि शनिवार को करौली के सीताबाड़ी इलाके की रहने वाली ज्वेलर फैमिली इंदौर (मध्य प्रदेश) गई थी। इंदौर में लड़के का सगाई-गोदभराई कार्यक्रम था। शनिवार को ही रात के नौ बजे परिवार के सभी लोग मिनी बस से करौली के लिए चले थे। रविवार सुबह दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे के चंबल पुल पर (बुढ़ादीत गांव) दुर्घटना हो गई। हादसा देखकर लगता है कि मिनी बस की स्पीड काफी तेज थी। आशंका जताई जा रही है कि मिनी बस के ड्राइवर को झपकी आने के कारण हादसा हुआ है। पुलिस के अनुसार मिनी बस में सवार सुरेश सोनी (45), ब्रजेश सोनी (45), गीता सोनी (63) और अनिल सोनी (48) की मौत हो गई। अनिल और ब्रजेश सगे भाई थे। इनकी मां गीता थी। सुरेश, गीता के दामाद थे। अनिल और ब्रजेश ज्वेलर थे। सुरेश सरकारी टीचर थे। उनकी पोस्टिंग भरतपुर में थी। अनिल के बेटे रानू की सगाई कार्यक्रम में सोनी परिवार के 14 लोग गए थे। रानू बेंगलुरु में इंजीनियर है। 3 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई थी, जबकि एक ने एमबीएस हॉस्पिटल (कोटा) में इलाज के दौरान दम तोड़ा। सूचना पर बुढ़ादीत पुलिस मौके पर पहुंची। अनिल के भतीजे संजय ने बताया कि परिवार के सदस्य सानिया, ममता, संजू, छोटू समेत 7 लोग हॉस्पिटल में भर्ती हैं। इनमें से 4 को प्राइवेट हॉस्पिटल ले जाया गया है। 3 का इलाज एमबीएस हॉस्पिटल में चल रहा है। तीन सदस्यों को हल्की चोट आई थी।

राष्ट्रपति ने राज्यसभा के लिए चार लोगों को किया मनोनीत

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी)। राष्ट्रपति मुर्मू ने राज्यसभा के लिए चार लोगों को मनोनीत किया है। इनमें सरकारी वकील उज्ज्वल देवराव निकम, केरल के वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षाविद् सी. सदानंदन मस्ते , भारत के पूर्व विदेश सचिव हर्षवर्धन श्रृंगला और प्रख्यात इतिहासकार व शिक्षाविद् मीनाक्षी जैन का नाम शामिल है। ये नामांकन पूर्व में नामित सदस्यों की सेवानिवृत्ति के कारण खाली पड़ी सीटों को मद्देनजर किए गए हैं। बता दें कि राष्ट्रपति मुर्मू ने संविधान के अनुच्छेद 80(1)(क) के खंड (3) द्वारा उन्हें दी गई शक्तियों के अंतर्गत इन लोगों को राज्यसभा के लिए चुना है। भारत के राष्ट्रपति राज्यसभा के लिए 12 व्यक्तियों को मनोनीत कर सकते हैं। ये लोग कला, साहित्य और लोक सेवा के क्षेत्र में अपनी प्रतिष्ठा के लिए जाने जाते हैं। हर्षवर्धन श्रृंगला पूर्व विदेश सचिव रहे हैं। उन्होंने पूर्व में संयुक्त राज्य अमेरिका, बांग्लादेश और थाईलैंड में राजदूत का पद भी संभाला है। उन्होंने 2023 में भारत की जी20 अध्यक्षता के लिए मुख्य समन्वयक के रूप में भी कार्य किया है। उज्जवल देवराव निकम कानूनी क्षेत्र में एक जाना-माना नाम हैं। कई हाई प्रोफाइल मुकदमों को संभालने के लिए उन्हें जाना जाता है, इनमें 26/11 मुंबई आतंकवादी हमलों में अजमल कसाब का मुकदमा और 1993 के बॉम्बे विस्फोट मामले शामिल हैं। उन्हें भारतीय जनता पार्टी ने 2024 के आम चुनावों में मुंबई उत्तर मध्य लोकसभा सीट से उम्मीदवार बनाया था।

उग्रवादी संगठन उल्फा के दावे का भारतीय सेना ने किया खंडन

जयपुर टाइम्स

गुवाहाटी/एजेंसी । प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन उल्फा (आई) ने दावा किया है कि भारत-म्यांमार सीमा के पास स्थित उनके कैंपों पर भारतीय सेना ने ड्रोन और मिसाइल से हमला किया है। हालांकि, सेना की ओर से इस दावे की पुष्टि नहीं की गई है। उल्फा (आई) ने रविवार को एक प्रेस बयान जारी कर कहा कि हमले सुबह के समय ड्रोन से किए गए और उनके कई मोबाइल कैंपों को निशाना बनाया गया। संगठन ने कहा कि इस हमले में उनके 'लोअर काउंसिल' के चेयरमैन नयन आसम उर्फ नयन मेधी की मौत हो गई, जबकि लगभग 19 अन्य लोग घायल हुए हैं। जब इस बारे में भारतीय सेना के प्रवक्ता से संपर्क किया गया, तो उन्होंने ऐसे किसी भी हमले की जानकारी से इनकार किया। लेफ्टिनेंट कर्नल महेन्द्र रावत ने कहा, 'भारतीय सेना के पास ऐसी किसी कार्रवाई की कोई जानकारी नहीं है।' इसके बाद ULFA(I) ने एक और बयान जारी कर दावा किया कि जब मारे गए नेता नयन आसम का अंतिम संस्कार किया जा रहा था, तब उनके कैंप पर फिर से मिसाइलों से हमला किया गया। संगठन के अनुसार इस हमले में उसके दो वरिष्ठ नेता - 'ब्रिगेडियर' गणेश आसम और 'कर्नल' प्रदीप आसम - मारे गए, जबकि कई अन्य सदस्य और कुछ आम लोग घायल हुए। इस पूरे घटनाक्रम पर प्रतिक्रिया देते हुए असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा ने कहा कि असम पुलिस या राज्य की ओर से ऐसी किसी भी कार्रवाई में शामिल होने की बात गलत है। उन्होंने कहा, 'असम पुलिस इसमें शामिल नहीं है और हमारी जमीन से कोई हमला नहीं हुआ है।' मुख्यमंत्री ने कहा कि अगर इस तरह की कोई सैन्य कार्रवाई होती, तो सेना की ओर से इसकी जानकारी सार्वजनिक की जाती, लेकिन अब तक ऐसा कुछ नहीं हुआ है। सीएम सरमा, जो राज्य के गृह मंत्री भी हैं, ने कहा कि 'इस मामले में और जानकारी की जरूरत है... शाम तक स्थिति साफ हो सकती है।'

आईसीपीए का बड़ा बयान

एआई-171 के चालक दल ने चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में जिम्मेदारी के साथ काम किया

जयपुर टाइम्स

मुंबई(एजेंसी)। भारतीय वाणिज्यिक पायलट संघ (आईसीपीए) ने रविवार को कहा कि पिछले महीने दुर्घटनाग्रस्त हुए एआई 171 विमान के चालक दल ने चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में जिम्मेदारी के साथ काम किया। चालक दल ने अपने प्रशिक्षण और कर्तव्यों का निर्वहन किया। ऐसे में पायलटों को अनुमान के आधार पर बदनाम नहीं किया जाना चाहिए। पायलटों की गलती को लेकर कुछ हलकों में लगाए जा रहे आरोपों को पुरजोर तरीके से खारिज करते हुए एअर इंडिया के नैरो-बॉडी पायलटों का प्रतिनिधित्व करने वाले इस संगठन ने जोर देकर कहा कि जब तक आधिकारिक जांच पूरी नहीं हो जाती और अंतिम रिपोर्ट सामने नहीं आ जाती, तब तक कोई भी अटकलबाजी अस्वीकार्य है। ऐसे कयासों की पुरजोर तरीके से निंदा की जानी चाहिए। आईसीपीए टाटा समूह के स्वामित्व वाली एअर इंडिया में नैरो-बॉडी बेड़े के पायलटों का निकाय है। भारतीय एयरलाइन पायलट संघ ने भी शनिवार को एअर इंडिया विमान दुर्घटना की निष्पक्ष और तथ्य-आधारित जांच की मांग की थी। उनकी ओर से दावा किया गया था कि एअर इंडिया विमान दुर्घटना की जांच का लहजा और दिशा पायलट की गलती की ओर झुकाव का संकेत देती है। उन्होंने आरोप लगाया था कि रिपोर्ट में पायलट को गलत ठहराने की हड़बड़ी दिखाई देती है। इससे पहले विमान दुर्घटना जांच ब्यूरो (एएआईबी) ने 12 जून को हुए घातक बोइंग 787-8 विमान दुर्घटना की अपनी प्रारंभिक रिपोर्ट जारी की थी। हादसे में 260 लोग मारे गए थे। रिपोर्ट में पाया गया है कि एअर इंडिया की उड़ान संख्या बी171 के दोनों इंजनों की ईंधन आपूर्ति एक सेकंड के अंतराल पर बंद हो गई, जिससे कॉकपिट में अफरा-तफरी मच गई और विमान उड़ान भरने के तुरंत बाद ही अपनी ऊंचाई खोते हुए क्रैश हो गया। 15 पृष्ठों की रिपोर्ट में कहा गया कि कॉकपिट की वॉयस रिकॉर्डिंग में एक पायलट ने दूसरे से पूछा कि उसने ईंधन स्विच क्यों बंद किया। हालांकि, दूसरे पालयट ने इससे इनकार किया। 12 जून को अहमदाबाद से लंदन गैटविक जा रही एअर इंडिया की एआई 171 उड़ान के दुर्घटनाग्रस्त होने पर अपनी प्रारंभिक रिपोर्ट में विमान दुर्घटना जांच ब्यूरो ने शनिवार को कहा कि बोइंग 787-8 विमान के ईंधन स्विच उड़ान भरने के तुरंत बाद बंद हो गए थे। कॉकपिट की वॉयस रिकॉर्डिंग में एक पायलट दूसरे से पूछता सुनाई दिया है कि उसने ईंधन क्यों बंद किया। दूसरे पायलट ने जवाब दिया कि उसने ऐसा नहीं किया। एएआईबी ने अपनी प्रारंभिक रिपोर्ट में कहा है कि जांच जारी है और जांच दल हितधारकों से मांगे जा रहे अतिरिक्त साक्ष्यों, अभिलेखों और सूचनाओं की समीक्षा और जांच करेगा। एअर इंडिया ने कहा है कि वह प्रारंभिक जांच रिपोर्ट की समीक्षा के लिए आने वाले दिनों में सत्र आयोजित करके अपने पायलट समुदाय को शामिल करेगी। इस पर आईसीपीए ने रविवार को कहा कि वह मीडिया और सार्वजनिक चर्चा में उभर रहीं अटकलों से बेहद परेशान है। पायलट की गलती के बेतुके और निराधार आरोप परेशान करने वाले हैं।

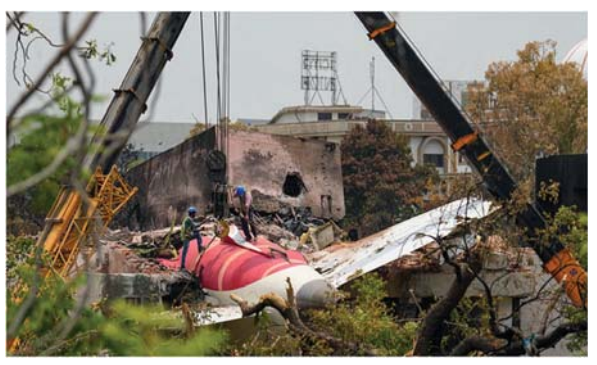

देशभर में मतदाता सूची संशोधन की तैयारी, चुनाव आयोग ने शुरू किया काम

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी)।। चुनाव आयोग ने अगले महीने से पूरे भारत में मतदाता सूची के विशेष पुनरीक्षण (एसआईआर) की तैयारी शुरू कर दी है। यह पुनरीक्षण बिहार में चल रहे विशेष पुनरीक्षण जैसा होगा। चुनाव आयोग की तरफ से यह कदम उस समय उठाया गया है जब पिछले हफ्ते सुप्रीम कोर्ट ने इसे संविधानिक दायित्व करार दिया और चुनाव आयोग को बिहार में इस प्रक्रिया को जारी रखने की अनुमति दी। बता दें कि चुनाव आयोग के इस फैसले के खिलाफ कुछ विपक्षी पार्टियों और अन्य संगठनों ने सुप्रीम कोर्ट में इस पुनरीक्षण के खिलाफ चुनौती दी थी, उनका कहना था कि इससे योग्य नागरिकों को वोट डालने का अधिकार मिल सकता है। अब कुछ राज्य चुनाव अधिकारियों ने उन राज्यों में आखिरी बार किए गए विशेष पुनरीक्षण के बाद प्रकाशित मतदाता सूची को सार्वजनिक कर दिया है। दिल्ली के मुख्य चुनाव अधिकारी की वेबसाइट पर 2008 की मतदाता सूची उपलब्ध है, जब राष्ट्रीय राजधानी में आखिरी बार पुनरीक्षण हुआ था। उत्तराखंड में 2006 में आखिरी पुनरीक्षण हुआ था, और अब उस वर्ष की सूची राज्य की वेबसाइट पर है। चुनाव आयोग ने कहा है कि 28 जुलाई को बिहार मामले की सुनवाई के बाद, वह देशव्यापी पुनरीक्षण पर अंतिम निर्णय लेगा। इस प्रक्रिया के तहत विदेशी अवैध प्रवासियों को उनके जन्मस्थान की जांच करके हटाया जाएगा। वहीं राज्यो में विधानसभा चुनाव की बात करें, तो बिहार में इस साल विधानसभा चुनाव होने हैं। जबकि असम, केरल, पुडुचेरी, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में अगले साल में विधानसभा चुनाव होंगे। चुनाव आयोग का देशव्यापी मतदाता सूची पुनरीक्षण करने का फैसला बांग्लादेश और म्यांमार समेत कई राज्यों में अवैध विदेशी प्रवासियों पर कार्रवाई के मद्देनजर महत्वपूर्ण है।

भारत विकास परिषद की कार्यशाला का हुआ आयोजन

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। भारत विकास परिषद राजस्थान उत्तर पूर्व प्रांत के अलवर ज़िले के शाखा दायित्वधारी सदस्यों की कार्यशाला अलवर शाखा द्वारा आयोजित की गई। कार्यशाला में अलवर, राजगढ़ तथा अरावली शाखा के 35 दायित्ववान सदस्यों ने सहभागिता की आयोजन शाखा अध्यक्ष सुरेश गोयल ने मंचासीन पदाधिकारियों का परिचय देते हुए सभी का स्वागत और अभिनन्दन किया। कार्यशाला के विविध सत्रों को सम्बोधित करते हुए प्रांतीय संरक्षक हेमन्त जोशी,प्रांतीय अध्यक्ष रणवीर सिंह त्यागी,प्रांतीय वित्त सचिव डी.के.गोयल, प्रांतीय संस्कार संयोजक प्रदीप गोयल, पूर्व प्रांतीय संरक्षक डॉ.कुमकुम कपूर ने क्रमशः संगठनात्मक, वित्तीय, संस्कार, सेवा एवं महिला सहभागिता की गतिविधियों पर सदन का मार्गदर्शन किया एवं सदस्यों की जिज्ञासाओं का भी समाधान किया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वक्ता रीजन संयुक्त महासचिव डॉ.शिव दयाल मंगल ने अपने सम्बोधन में शाखाओं के पदाधिकारियों को दायित्वबोध कराते हुए समाज और राष्ट्र के विकास में परिषद के योगदान को विस्तार देने के लिए प्रेरित किया प्रांतीय अध्यक्ष रणवीर सिंह त्यागी ने अपने उत्तर पूर्व प्रांत की गतिविधियों के सफल संचालन के लिए सभी शाखाओं के सकारात्मक एवं सक्रिय सहयोग का आव्हान किया पूर्व रीजन संरक्षक डॉ. के.के गुप्ता ने कार्यशाला के सफल आयोजन के लिए अलवर शाखा की सराहना की एवं उपस्थित सहभागियों को अपनी-अपनी शाखा में परिषद के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रेरित किया आयोजक शाखा सचिव राधेश्याम ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया कार्यक्रम में प्रांतीय प्रकल्प संयोजक सुरेश मेठी सहित तीनों शाखाओं के पदाधिकारीगण की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का सफल संचालन रमन सोनी ने किया। राष्ट्रगीत का सुमधुर गायन अमित गोयल ने किया।

ग्रामीणों ने जयपुर विकास प्राधिकरण से सड़क बनवाने की मांग की

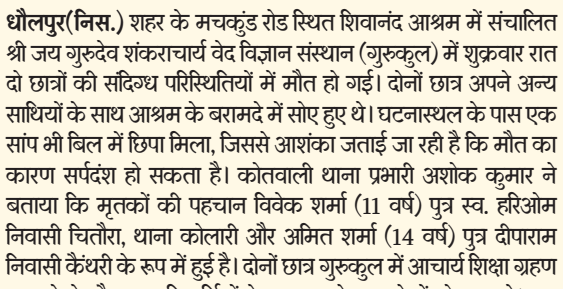

जयपुर टाईम्स

सांगानेर(कासं.) जयपुर विकास प्राधिकरण के जोन 14 के मोहब्बतपुरा से कौशल्या दास की बावड़ी व मोहब्बपुरा से बालावाला लिंक रोड को जोड़ने वाली सड़क डाबला खुर्द व डाबला बुजुर्ग होते हुए सड़क 12-13 वर्ष पूर्व बनी डामर सड़क कई स्थानों पर क्षतिग्रस्त होकर गड्ढों में तब्दील हो गई है। बीते दिनों हुई अच्छी बारिश के बाद इस सड़क के हालात और भी अधिक खराब हो गए हैं। गौरतलब है कि जेडीए की ओर से वर्ष 2011-2012 में करवाए गए सड़क निर्माण कार्यों के तहत इन डामर सड़कों का भी निर्माण कराया गया था, लेकिन रखरखाव के अभाव में इन सड़कों की डामर पूरी तरह उखड़ चुकी है। स्थानीय निवासी जितेन्द्र शर्मा ने बताया कि ग्राम मोहब्बतपुरा से कौशल्या दास की बावड़ी व मोहब्बपुरा से बालावाला लिंक रोड को जोड़ने वाली सड़क डाबला खुर्द व डाबला बुजुर्ग होते हुए ये सड़के जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा वर्ष 2011-2012 में बनाई गई थी जो वर्तमान में क्षतिग्रस्त अवस्था में है इन सड़की की हालत बहुत जर्जर हो चुकी है जिससे आमजन को आवाजाही में बहुत परेशानी होती है। इसके लिए विधायक रामावतार बैरवा सरपंच विमला चौधरी द्वारा भी जेडीए को पत्र लिखकर ये सड़के बनवाने की मांग की गई है अतःस्थानीय निवासियों ने जयपुर विकास प्राधिकरण व जनप्रतिनिधियों से ये सड़के जल्द से जल्द बनवाने की मांग की जिससे जनता को आवागमन में सहूलियत मिले।

धौलपुर के गुरुकुल में संदिग्ध हालात में दो छात्रों की मौत, पास में मिला सांप

जयपुर टाईम्स

धौलपुर(निस.) शहर के मचकुंड रोड स्थित शिवानंद आश्रम में संचालित श्री जय गुरुदेव शंकराचार्य वेद विज्ञान संस्थान (गुरुकुल) में शुक्रवार रात दो छात्रों की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। दोनों छात्र अपने अन्य साथियों के साथ आश्रम के बरामदे में सोए हुए थे। घटनास्थल के पास एक सांप भी बिल में छिपा मिला, जिससे आशंका जताई जा रही है कि मौत का कारण सर्पदंश हो सकता है। कोतवाली थाना प्रभारी अशोक कुमार ने बताया कि मृतकों की पहचान विवेक शर्मा (11 वर्ष) पुत्र स्व. हरिओम निवासी चितौरा, थाना कोलारी और अमित शर्मा (14 वर्ष) पुत्र दीपाराम निवासी कैंथरी के रूप में हुई है। दोनों छात्र गुरुकुल में आचार्य शिक्षा ग्रहण कर रहे थे और अन्य विद्यार्थियों के साथ खुले बरामदे में सोए हुए थे। रात करीब 3 बजे विवेक शुक्ला को आसपास सांप होने का आभास हुआ। जब वह उठा तो देखा कि विवेक और अमित बैठे हुए थे और कुछ ही देर में दोनों बेचैन होने लगे। इस पर तत्काल परिजनों को सूचना दी गई। अमित को उसके पिता दीपाराम अस्पताल लेकर गए जबकि विवेक को अन्य साथी बाइक से घर लेकर पहुंचे, जहां से परिजन उसे अस्पताल लेकर गए। दोनों को डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। वहीं, बरामदे के पास बने बिल में सांप के दिखाई देने की सूचना पर वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और सांप को सुरक्षित रेस्क्यू किया गया। फिलहाल दोनों शवों को धौलपुर जिला अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया गया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा है। प्रारंभिक दृष्टि से सर्पदंश की आशंका जताई जा रही है, लेकिन वास्तविक कारण रिपोर्ट के बाद ही स्पष्ट हो पाएगा। आश्रम प्रशासन और अभिभावकों के बीच इस घटना को लेकर गहरी चिंता और शोक की लहर है।

घर में छिपाकर रखा था डोडा-पोस्त, तस्कर गिरफ्तार

जोधपुर (निसं.)जोधपुर ग्रामीण की बोरुंदा थाना पुलिस ने ऑपरेशन भौकाल के तहत कार्रवाई करते हुए एक आरोपी के घर से 13 किलो 300 ग्राम अवैध डोडा पोस्त बरामद किया है। मामले में आरोपी को गिरफ्तार किया गया। प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया कि आरोपी लंबे समय से मादक पदार्थों की तस्करी में शामिल था। उसके खिलाफ पहले से ही दो मामले भी दर्ज हैं। ग्रामीण एसपी राममूर्ति जोशी ने बताया कि ऑपरेशन भौकाल के तहत बोरुंदा थाना पुलिस ने मादक पदार्थ तस्कर सिकंदर पुत्र जमाल मोहम्मद के घर पर दबिश दी।

केंद्रीय पर्यावरण मंत्री एवं अलवर सांसद ने किया नीमराणा से हरियाणा सीमा तक सड़क का शिलान्यास

केंद्र और राज्य सरकार क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध- मंत्री यादव

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली- बहरोड़(निसं.)। केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री एवं अलवर सांसद भूपेन्द्र यादव रविवार को नीमराना के बावड़ी के पास आयोजित स्टेटहाईवे-111 (नीमराना से हरियाणा सीमा तक) सड़क के शिलान्यास कार्यक्रम में शामिल होने पहुंचे। यादव ने सड़क शिलान्यास कर आमजन को संबोधित करते हुए कहा कि नीमराणा में केंद्र सरकार द्वारा 50 करोड़ रुपये की लागत का स्वीकृत स्टेटहाईवे-111 रोड़ नीमराना से नाघोड़ी, घिलोठ, डाबड़वास चावण्डी, माँढ़ण, गिगलाना, रायसराना, बिघाना जाट एवं हरियाणा सीमा की कनेक्टिविटी को बेहतर करेगा. उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने 2 सालों में करीब 270 किमी सड़क के लिए 270 करोड़ रुपए दिए हैं, जिनमें इस 48 किमी सड़क के लिए 50 करोड़ रुपए स्वीकृत किए गए हैं। यादव ने कहा कि मेरे यहां आने का मुख्य उद्देश्य नीमराणा की जनता को चुनावों में मेरा साथ देने के लिए धन्यवाद व आभार जताना था, यहां की जनता से मुझे बहुत ही मान और सम्मान मिला है.। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का मानना है "सरकारी योजनाओं को सौ प्रतिशत पूरा कराना असली धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय है" और मैं इसी को पूरा करने का प्रयास कर रहा हूँ। यादव ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को धन्यवाद देते हुए कहा कि उन्होंने क्षेत्र के विकास के लिए केंद्र के साथ मिलकर केंद्र की योजनाओं को पूरा करने की सहमति दिखाई है। उन्होंने कहा कि मैने पिछले 1 साल में लोकसभा क्षेत्र में 383 से अधिक कार्यक्रम किए और लगभग 600 गांवों का दौरा किया एवं आमजन की समस्याओं के निस्तारण का प्रयास किया है. उन्होंने कहा कि पूर्वी राजस्थान की सबसे बड़ी जल समस्या के समाधान के लिए मुख्यमंत्री ने जन समस्याओं को समझा एवं केंद्र सरकार ने भी नदियों को जोड़ने के लिए विशेष समिति गठित की एवं प्रधानमंत्री ने पार्वती- काली सिंध- चंबल परियोजना को अनुमोदन दिया. राजस्थान और मध्यप्रदेश सरकार के समन्वय से केंद्र सरकार ने इस पर पूरा मार्गदर्शन दिया और इसी का परिणाम हुआ कि 28 जनवरी को दोनों राज्यो के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर हुए और प्रधानमंत्री की उपस्थिति में 17 दिसंबर को दोनों राज्यो का एमओयू का आदान-प्रदान भी हुआ। उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने राजस्थान सरकार की डीपीआर को स्वीकृति प्रदान कर दी है, इस पूरी परियोजना में कुल 4102 मिलियन क्यूबिक मीटर जल उपलब्ध होगा, जिसमें 522 क्यूबिक मीटर जल को पुन संशोधित करके रखा जाएगा. उन्होंने कहा कि 300 मिलियन क्यूबिक मीटर पानी अलवर, राजगढ़, रैनी, मालाखेड़ा, उमरैण के साथ-साथ हमारे क्षेत्र के जलाशयों में आएगा।

किताब भेंट कर किया सम्मान

कार्यक्रम के दौरान आयोजकों ने मंच पर किताब भेंट कर पर्यावरण मंत्री का अभिवादन किया गया। भेंट में आई किताब को माननीय मंत्री ने कार्यालय में रखने के निर्देश दिए। इस दौरान बहरोड़ विधायक डॉ. जसवंत यादव, जिला प्रमुख बलबीर सिंह छिल्लर, जिलाध्यक्ष महासिंह चौधरी, पूर्व जिलाध्यक्ष उम्मेद भाया, प्रधान संतोष यादव, जिला क्रिकेट संघ अध्यक्ष मोहित यादव, जिला मंत्री सविता यादव, नेत्री डॉ अंजली यादव, मण्डल अध्यक्ष राकेश खंडेलवाल, मनीष यादव, जिला पार्षद वेदप्रकाश खबरी, जयप्रकाश झाबर, इंद्र यादव, बलवान यादव, एडवोकेट बस्ती राम यादव, रमेश प्रधान, महेश टेलर, पिंटू चौधरी, नीलम यादव, जयभारत सोनी, दुर्गादत्त शर्मा, महेंद्र शर्मा, सहित बड़ी संख्या में क्षेत्रवासी मौजूद रहे।

5100 लीटर गंगाजल से हुआ भोले बाबा का जलाभिषेक

सोमनाथ ज्योतिर्लिंग की झांकी सजेगी आज

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। अलवर शहर के पहली बार हरिद्वार से लाए 5100 लीटर गंगाजल से शहर के त्रिपोलिया महादेव मंदिर में जलाभिषेक किया गया। ये कार्यक्रम भी अलवर के इतिहास में पहली बार किया गया। वही सावन के पहले सोमवार को त्रिपोलिया महादेव मंदिर में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। मंदिर महंत जितेंद्र खेड़ापति ने बताया कि सुबह 11.30 बजे जलाअभिषेक का कार्यक्रम शुरू किया गया। हरिद्वार से टैंकर भरके गंगाजल मंगवाया गया था। गंगा जल 5100 लीटर था। इस अवसर पर मंदिर में 11 वेद पाठी पंडितों द्वारा विधि विधान से रुद्री पाठ किया गया। इसके बाद अनवरत रूप से सार्वजनिक रूप से सभी भक्तों की ओर से बाबा को गंगाजल चढ़ाया गया। जलाभिषेक के बाद प्रसाद वितरण किया गया। इधर दोपहर में रामरसोई के माध्यम से त्रिपोलिया में भक्तों को भोजन कराया गया। महंत जितेंद्र खेड़ापति ने बताया कि श्रावण मास के प्रथम वन सोमवार को बाबा त्रिपोलिया नाथ की सोमनाथ ज्योतिर्लिंग झांकी सजाई जाएगी। जिसके दर्शन शाम 6 बजे से रात्रि 11.00 बजे तक कतारबद्ध भक्त दर्शन करेंगे। प्रातः 4.00 बजे भगवान का अभिषेक गंगाजल आदि स्नान के पश्चात पोशाक धारण कराई जाएगी इसके बाद मंगला आरती होगी। द्वितीय आरती पौने छह बजे विष्णु पूजा होगी। दोपहर में महिला भक्तों द्वारा सत्संग एवं कीर्तन होगा। इसके बाद दोपहर तीन बजे से चार बजे तक साफ-सफाई के चलते मंदिर में आमजन का प्रवेश निषेध रहेगा। उन्होंने बताया कि रात्रि 11.30 पर दूध अभिषेक का कार्यक्रम होगा। इसके बाद महाआरती होगी।

चित्रकला प्रतियोगिता में अव्वल रहे बच्चों का किया सम्मान, दिए पुरुस्कार

भगवान जगन्नाथ जी के मेला अवसर पर आयोजित हुई चित्रकला प्रतियोगिता

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। अलवर के आराध्य देव भगवान श्री जगन्नाथ जी के मेले के अवसर पर बच्चों में सनातन धर्म एवं संस्कृति के प्रति जुड़ाव व लगाव बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित हुई चित्रकला प्रतियोगिता के विजेता छात्रों को पारितोषिक वितरण किया गया। प्रतियोगिता संयोजक प्रिंसिपल ओपी शर्मा ने बताया कि चित्रकला प्रतियोगिता में जिले के अनेक विद्यालयों के 1500 से अधिक बच्चों ने जूनियर एवं सीनियर वर्गों में भाग लिया। इस प्रतियोगिता में स्कूली विद्यार्थियों ने भगवान जगन्नाथ जी और मेला व रथ यात्रा से संबंधित चित्र बनाए। जहां चित्रकला प्रतियोगिता में कक्षा 9 से 12 में सीनियर वर्ग में सोनिया प्रथम, येशना सैनी द्वितीय, दीपिका प्रजापत एवं तरन्नुम तृतीय स्थान पर रहे। प्रियंजलि, प्रिया गुप्ता, चहना शर्मा, आंचल खंडेलवाल, हनी शर्मा, वंशिका, मौलिक, सिमरन दौलतानी , पीहू, दर्शिता शर्मा सांत्वना पुरस्कार विजेता छात्रों को भगवान श्री जगन्नाथ जी के मंदिर प्रांगण में आयोजित सम्मान समारोह में पुरस्कृत किया गया। जूनियर वर्ग कक्षा 5 से 8 में श्रेष्ठा शर्मा प्रथम, कनिका गुप्ता द्वितीय , अंशिता गुप्ता एवं दक्ष स्वामी तृतीय स्थान पर रहे। वहीं इस वर्ग में हिमांशी मीना, गरिमा कंवर, गार्गी खंडेलवाल, तनिष्का गुप्ता, लवी अग्रवाल, गर्वित गुप्ता, दुर्गांशी मिश्रा, कनिष्क यादव, साव्या पंचोली, आन्या को पुरस्कार प्रमाण पत्र एवं बनाई गई पेंटिंग सहित दुपट्टा माला पहनाकर सम्मानित किया गया। उन्होंने बताया कि दोनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विजेता बच्चों के चित्रों को श्री जगन्नाथ जी मंदिर सुभाष चौक में प्रदर्शन हेतु लेमिनेशन कर लगाया गया है। इसके साथ ही विजेता छात्रों को भी अपनी लेमिनेटड पेंटिंग प्रदान की गई। मेला कमेटी की ओर से सभी सहभागियों को भी सहभागिता का प्रमाण पत्र दिया गया ओर सभी के उज्जवल भविष्य हेतु शुभकामनाएं प्रेषित की गई। इस दौरान मेला कमेटी की ओर से अध्यक्ष पंडित राजेंद्र शर्मा, सचिव पंडित देवेंद्र शर्मा, पं बृजेंद्र शर्मा, पं धर्मेंद्र शर्मा, दीपक पंडित, मीनू शर्मा, मोना दुबे, सरिता उपाध्याय, मोहित पंडित, भगवान स्वरूप शर्मा, धीरज उपाध्याय, राजकुमार शर्मा, ओपी शर्मा सहित संयोजक मंडल उपस्थित रहा।

कार में तोड़फोड़-चोरी के 2 आरोपी गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। झुंझुनूं शहर के रीको और हाउसिंग बोर्ड इलाकों में खड़ी कारों को निशाना बनाकर की जा रही तोड़फोड़ और चोरी की घटनाओं में पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी। कोतवाली थाना पुलिस ने दो शातिर चोरों को गिरफ्तार किया है, जो हरियाणा के रहने वाले हैं और वाहन चोरी के अंतरराज्यीय गिरोह से जुड़े बताए जा रहे हैं। दोनों आरोपियों ने पूछताछ में रीको से कार के पार्ट्स और हाउसिंग बोर्ड से एक कार चोरी करने की बात स्वीकार की है। कोतवाली थानाधिकारी हरजिंदर सिंह ने बताया कि 4 जून 2025 को दिलीप सिंह निवासी खरबासों की ढाणी हुक्मपुरा, हाल शास्त्री नगर फेज-2, रीको झुंझुनूं ने थाने में एक रिपोर्ट दी थी। उन्होंने बताया कि 3 जून की रात को उनकी खड़ी कार से अज्ञात चोर ईसीयू, डैशबोर्ड वायरिंग, हॉर्न, कॉलम कवर, डैशबोर्ड कवर समेत कई कीमती सामान चोरी कर ले गए और वाहन को नुकसान पहुंचाया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की और आसपास के सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली। इसी बीच, थाना कालवाड़ (जयपुर) पुलिस से सूचना मिली कि उन्होंने दो संदिग्धों को वाहन चोरी के आरोप में पकड़ा है। पूछताछ में दोनों ने झुंझुनूं में भी चोरी की वारदात करना स्वीकार किया। इस पर झुंझुनूं पुलिस ने कोर्ट से प्रोडक्शन वारंट प्राप्त कर दोनों को गिरफ्तार किया और कोतवाली लाया गया। थानाधिकारी हरजिंदर सिंह ने बताया कि जब झुंझुनूं लाकर दोनों आरोपियों से गहन पूछताछ की गई, तो उन्होंने रीको की घटना के अलावा शहर के हाउसिंग बोर्ड इलाके से एक कार चोरी करने की बात भी स्वीकार की। अब पुलिस इस दूसरी वारदात की भी जानकारी जुटा रही है और यह पता लगाया जा रहा है कि चोरी की गई कार कहां गई, और उसमें किन-किन लोगों की भूमिका रही।

निशुल्क जांच एवं परामर्श शिविर आयोजित

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। विश्व त्वचा स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर भारतीय त्वचा, यौन एवं कुष्ठ रोग विशेषज्ञ महासंघ के तत्वाधान में जिले में पहली बार अलवर इकाई की ओर से अपना घर महिला एवं पुरुष आश्रम में निशुल्क त्वचा स्वास्थ्य जागरूकता एवं उपचार शिविर का आयोजन किया गया डॉ मुकेश सैनी के नेतृत्व में डॉ सोनम मीना, डॉ स्वाति चौधरी, अरविंद एवं विजय सैनी की टीम ने वैशाली नगर स्थित महिला आश्रम में रह रहे प्रभुजी सेवा साथियो एवं आसपास क्षेत्र के निवासियों को आमजन में इस मौसम में होने वाली त्वचा संबंधी रोगों के प्रति जानकारी देकर जागरूक किया। उसके बाद सभी का परीक्षण कर निशुल्क दवा उपलब्ध करायी गयी । इस कैम्प में 54 त्वचा रोग से पीड़ित लोगों को परामर्श देकर दवा वितरित की गयी इसी प्रकार विवेकानंद नगर स्थित अपना घर पुरुष शाखा में डॉ मुकेश सैनी के नेतृत्व में डॉ सतपाल यादव, डॉ दीपक सैनी एवं उनकी टीम ने अपना घर में रह रहे प्रभुजी, सेवा साथियो और आसपास क्षेत्रों के 49 त्वचा रोग से ग्रसित लोगों को निशुल्क सेवा देते हुए दवा भी वितरित की गई कार्यक्रम में दोनों अपना घर आश्रम के संरक्षक अशोक मेठी ने दोनों स्थानो पर टीम का स्वागत करते हुए उनके द्वारा दी जा रही निशुल्क सेवाओं के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर महिला आश्रम के अध्यक्ष डॉ गजेंद्र सिंह, सचिव सुशीला शर्मा, कविता यादव, पुरुष आश्रम के अध्यक्ष सतीश सारस्वत उपाध्यक्ष सरला जैन, सचिव डॉ अशोक गुप्ता, वित्त सचिव के के खण्डेलवाल ने अपना पूरा सहयोग दिया।

देश के विकास में पुरुषार्थी समाज की महती भूमिका: वन राज्यमंत्री शर्मा

वन राज्यमंत्री ने किया प्रतिभावान बच्चों को सम्मानित

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री संजय शर्मा ने रविवार को प्रताप ऑडिटोरियम में पुरुषार्थी जिला समिति अलवर द्वारा आयोजित अभिनन्दन एवं स मान समारोह कार्यक्रम में शिरकत कर समाज के प्रतिभावान बच्चों को सम्मानित किया। वन राज्यमंत्री शर्मा ने पुरूषार्थी समाज की कार्यकारिणी को शुभकामनाएं देते हुए अपने संबोधन में कहा कि भारत माता की सेवा करने और देश के नव निर्माण में पुरुषार्थी समाज की महती भूमिका रही है। देश की आजादी के आंदोलन में गुलामी बेडियों को तोडने के लिए शहीद भगत सिंह जैसे सैकड़ों स्वतंत्रता सेनानी इसी समाज ने दिए है। उन्होंने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था को आगे बढाने में पुरूषार्थी समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने कहा कि अलवर में पुरुषार्थी समिति की ओर से युवा और प्रतिभावान बच्चों को सम्मानित करना प्रेरणादायक है। उन्होंने समाज के प्रतिभावान बच्चों को सम्मानित किया तथा उनको प्रोत्साहित कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि डॉ. भीमराव अम्बेडकर है कि जो समाज अच्छी शिक्षा ग्रहण करेंगा वो निश्चित रूप से आगे बढेगा। उन्होंने पंजाबी बोर्ड के गठन, पुरुषार्थी समाज की कोचिंग और स्कूल के लिए जमीन आवंटन कराने आदि की मांग पर सकारात्मक प्रयास करने का आश्वासन दिया। इस मौके पर रामगढ़ विधायक सुखवंत सिंह ने कहा कि अलवर जिले के पुरुषार्थी समाज ने सेवा के माध्यम से अपनी अलग पहचान बनाई है। समाज द्वारा सामाजिक क्षेत्र में निरन्तर मानवता की सेवा की भावना से सकारात्मक कार्य किए जा रहे हैं जो सराहनीय कदम है और इससे अन्य समाजों को भी प्रेरणा मिलती है। इस अवसर पर जिला पुरुषार्थी समिति के अध्यक्ष कुलदीप कालरा ने अतिथियों का स्वागत किया। मंच संचालन दिनेश शर्मा एवं सुरेश नागपाल ने किया। इस दौरान राकेश अरोड़ा, जय आहूजा, पंजाब से यादवेंद्र सिंह भुट्टल, हरमिन्दर सिंह, सुदेश खा बरा, राजेश मक्कड़, अशोक आहूजा, राजेश सेतिया, देवेन्द्र छाबडा, के.के मदान, दौलत राम हजरती, महेश निहलवानी, रमन गुलाटी, दीवान चंद सेतिया, धर्मेंद्र अदलखा, अजय सहगल, दर्शन अरोड़ा, जयराज मेंहदीरता, संदीप कालरा, राजेश मुखीजा, वंदना भाटिया सहित प्रबुद्ध व्यक्ति एवं बडी संख्या में पुरूषार्थी समाज के लोग मौजूद रहे।

जनसुनवाई कर आमजन की परिवेदनाओं को सुना

इससे पहले वन राज्यमंत्री संजय शर्मा ने अपने निवास स्थान 201 रघुमार्ग पर जनसुनवाई कर विभिन्न स्थानों से पेयजल, विद्युत, सडक, पुलिस आदि की परिवेदनाएं लेकर आए फरियादियों की परिवेदनाओं को संवेदनशीलता के साथ सुनकर संबंधित अधिकारियों को उनके त्वरित निराकरण के निर्देश दिये। उन्होंने निर्देश दिये कि फरियादियों की समस्याओं का निराकरण होने पर उन्हें सूचित कर उनके संतुष्टि स्तर में वृद्धि करें। उन्होंने निर्देश दिये कि आमजन को मूलभूत समस्याओं की प्राथमिकता से सुनवाई करें। इस कार्य में लापरवाही किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

राज्य जयपुर टाइम्स

जयपुर, सोमवार
14 जुलाई, 2025

राजस्थान में 4 नई भर्तियों की तैयारी, अगस्त से शुरू होंगे आवेदन; परीक्षा छोड़ने पर होगी कार्रवाई

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड प्रदेश में चार अहम भर्ती परीक्षाओं की तैयारी कर रहा है। इनमें प्लाटून कमांडर, लैब असिस्टेंट, जमादार और शिक्षक भर्ती परीक्षा (रीट) शामिल हैं। बोर्ड अध्यक्ष आलोक राज ने जानकारी दी कि इन भर्तियों की विज्ञप्तियां इसी माह जारी होने की संभावना है, जबकि अगस्त से आवेदन प्रक्रिया प्रारंभ होगी। बोर्ड द्वारा प्लाटून कमांडर के करीब 100, लैब असिस्टेंट के लगभग 200 पदों पर भर्ती की योजना है। इसके अलावा शिक्षा विभाग में रिक्त चल रहे 700 से 800 लैब असिस्टेंट के पदों को भी शामिल करने के लिए अंतिम दौर की वार्ता चल रही है, जिससे एक ही बार में बड़ी संख्या में पद भरे जा सकें। जमादार और प्लाटून कमांडर भर्ती की स्वीकृति मिल चुकी है, जबकि रीट (शिक्षक भर्ती) के लिए शिक्षा विभाग के साथ संवाद जारी है। आलोक राज ने बताया कि इन भर्तियों के लिए व्यापक तैयारी की जा रही है, ताकि समयबद्ध तरीके से नियुक्तियां की जा सकें। बोर्ड ने यह भी स्पष्ट किया है कि इस बार अभ्यर्थियों को आवेदन फॉर्म में संशोधन और वापस लेने की सुविधा दी जाएगी। लेकिन यदि कोई अभ्यर्थी फॉर्म भरने के बाद परीक्षा में शामिल नहीं होता है, तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। यह नियम भविष्य में आयोजित होने वाली सभी भर्तियों पर भी लागू रहेगा। सरकार की पारदर्शी भर्ती नीति के तहत यह कदम उठाया जा रहा है ताकि गंभीर अभ्यर्थियों को ही अवसर मिल सके और परीक्षा संसाधनों का दुरुपयोग न हो।

नेत्रहीन को झूठे केस में फंसाने पर हाईकोर्ट सख्त, रिहाई के साथ 2 लाख मुआवजे का आदेश

जयपुर टाइम्स

जोधपुर(निसं.) राजस्थान हाईकोर्ट ने एक नेत्रहीन युवक को झूठे आपराधिक मामले में फंसाने पर सख्त रुख अपनाते हुए उसे तत्काल रिहा करने का आदेश दिया है। साथ ही राज्य सरकार को 2 लाख रुपए मुआवजा देने और दोषी पुलिस अधिकारियों के खिलाफ विभागीय जांच शुरू करने के निर्देश दिए हैं। मामला चूरू जिले के तारानगर थाना क्षेत्र का है, जहां मार्च 2025 में एक युवक के अपहरण और मारपीट की एफआईआर में 85% दृष्टिबाधित मोतिया उर्फ अम्मीचंद (29) को आरोपी बनाया गया। जबकि न तो उसका नाम शिकायत में था और न ही घटना से कोई संबंध। पुलिस ने जबरन उसकी निशानदेही पर एक डंडा बरामद दिखाकर उसे गिरफ्तार किया और जेल भेज दिया। चार्जशीट दाखिल हो चुकी थी, इसलिए पुलिस अधीक्षक द्वारा रिहाई के निर्देश देने के बावजूद निचली अदालत ने पुलिस का आवेदन खारिज कर दिया। इस पर पीड़ित की ओर से हाईकोर्ट में अधिवक्ता कौशल गौतम ने याचिका दायर की। जस्टिस मनोज गर्ग ने सुनवाई के दौरान कहा कि "पुलिस अधिकारियों ने जानबूझकर एक निर्दोष और विकलांग व्यक्ति को फंसाया है, संभवतः असली अपराधियों को बचाने के लिए।" कोर्ट ने यह भी कहा कि एसएचओ और जांच अधिकारी की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। एसपी चूरू द्वारा कराई गई ट्रेनी आईपीएस की जांच में खुलासा हुआ कि मोतिया घटना के वक्त मौके पर मौजूद ही नहीं था। इसके बाद संबंधित जांच अधिकारी को निलंबित कर दिया गया। हाईकोर्ट ने चूरू कलेक्टर को आदेश दिया है कि 15 दिन के भीतर पीड़ित की दृष्टिबाधिता की पुष्टि कर रिपोर्ट सौंपें। अगर पुष्टि होती है तो राज्य सरकार को उसे मुआवजा देना होगा। कोर्ट के इस फैसले को मानवाधिकार और न्यायिक जवाबदेही की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

फलोदी में स्मार्ट मीटर के खिलाफ 15 जुलाई को रैली, सर्व समाज समिति करेगी नेतृत्व

जयपुर टाइम्स

फलोदी(निसं.) जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड द्वारा लगाए जा रहे स्मार्ट मीटरों के विरोध में फलोदी में 15 जुलाई को सर्व समाज समिति के नेतृत्व में विशाल रैली निकाली जाएगी। यह रैली लटियालपुरा स्कूल से सुबह 10 बजे शुरू होकर शहर के प्रमुख मार्गों से गुजरते हुए जिला कलेक्टर कार्यालय और अधीक्षण अभियंता कार्यालय पहुंचेगी, जहां प्रदर्शनकारी ज्ञापन सौंपेंगे। इस विरोध प्रदर्शन को भारतीय किसान संघ का भी समर्थन मिला है। संघ के लगभग 200 ट्रैक्टर और अन्य चार पहिया वाहन रैली में भाग लेंगे। विभिन्न समाजों की ओर से लगातार बैठकें की जा रही हैं और मुख्यमंत्री, ऊर्जा मंत्री, अधीक्षण अभियंता तथा स्थानीय विधायक को ज्ञापन भेजे जा रहे हैं। पुष्करणा न्याति समिति के अध्यक्ष नरेश व्यास इस आंदोलन का नेतृत्व करेंगे। व्यास ने कहा कि स्मार्ट मीटरों को लेकर उपभोक्ताओं में गहरी नाराजगी है। जिन इलाकों में ये मीटर लगाए गए हैं, वहां लोगों का अनुभव अच्छा नहीं रहा। उपभोक्ताओं का आरोप है कि स्मार्ट मीटर सामान्य मीटरों की तुलना में कहीं ज्यादा तेज चलते हैं, जिससे बिजली बिल अनावश्यक रूप से बढ़ रहे हैं। प्रदर्शनकारियों की मांग है कि इन स्मार्ट मीटरों को तुरंत हटाया जाए और पारंपरिक मीटर प्रणाली को बहाल किया जाए। स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि उनकी मांगों पर ध्यान नहीं दिया गया तो आंदोलन को और व्यापक रूप दिया जाएगा।

सामोद में बीएसएनएल सेवाएं ठप, व्यापारियों का डिजिटल लेन-देन प्रभावित

जयपुर टाइम्स

चौमूं(निसं.) सामोद क्षेत्र में बीएसएनएल की मोबाइल और इंटरनेट सेवाएं पिछले पूरी तरह ठप रही , जिससे आमजन के साथ-साथ व्यापारियों को भी भारी परेशानी का सामना करना पड़ा । कॉल, इंटरनेट और डिजिटल भुगतान सेवाएं पूरी तरह बाधित हुई , जिससे क्षेत्र में दैनिक गतिविधियों पर असर पड़ स्थानीय व्यापारियों और निवासियों ने बताया कि फोन-पे, गूगल-पे जैसी डिजिटल भुगतान सेवाएं बंद होने से ग्राहक और दुकानदार दोनों असहज स्थिति में हैं। खासतौर पर किराना, मेडिकल और अन्य जरूरी सेवाओं में लेन-देन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। ग्रामीणों का कहना है कि वे लगातार बीएसएनएल अधिकारियों को शिकायत कर रहे हैं, लेकिन न तो कोई अधिकारी जवाब दे रहा है और न ही सेवा बहाल करने की दिशा में कोई ठोस प्रयास हो रहा है। विभाग की इस उदासीनता से लोगों में रोष बढ़ता जा रहा है। ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द सेवाएं बहाल नहीं की गईं तो वे विरोध प्रदर्शन करेंगे। इस मामले में चौमूं बीएसएनएल के दूरसंचार अधिकारी राजेश कुमार से संपर्क करने की कोशिश की गई, लेकिन उनका फोन नहीं उठ पाया। उपभोक्ताओं ने बीएसएनएल से तकनीकी खामियों को शीघ्र दूर कर सेवा बहाली की मांग की है।

बांसवाड़ा में भाजपा विधायक का थाने में हंगामा, बोले- थाने को दलालों का अड्डा बना दिया

जयपुर टाइम्स

बांसवाड़ा(निसं.) बांसवाड़ा जिले के गढ़ी थाना क्षेत्र में शनिवार को भाजपा विधायक कैलाश मीणा ने पुलिस प्रशासन के खिलाफ जमकर नाराजगी जाहिर की। थाने में हेड कांस्टेबल द्वारा "तू कौन है?" कहने पर विधायक थाने की सीढ़ियों पर ही बैठ गए और बाद में गेट पर धरने पर भी बैठ गए। रविवार को इसका वीडियो सामने आया, जिसने पूरे जिले की राजनीति में हलचल पैदा कर दी। विधायक गढ़ी थाने में दो मामलों की कार्रवाई न होने पर सीआई रोहित कुमार से मिलने पहुंचे थे। पहला मामला एक युवक और युवती की संदिग्ध आत्महत्या का था, जिसमें परिजनों ने पुलिस पर उकसाने का आरोप लगाया था। दूसरा मामला बेड़वा पंचायत में वर्ष 2022 में मृत महिला के नाम पर जमीन का फर्जी हस्तांतरण और भू-माफियाओं के गठजोड़ का था। विधायक ने इन मामलों में पुलिस की निष्क्रियता पर कड़ी आपत्ति जताई। थाने में हेड कांस्टेबल ने जब विधायक से पहचान पूछी तो वे भड़क गए और वहीं धरने पर बैठ गए। सूचना पर डीएसपी सुदर्शन पालीवाल मौके पर पहुंचे और विधायक को समझाकर भीतर ले गए। लेकिन वहां भी विधायक का गुस्सा शांत नहीं हुआ। विधायक मीणा ने DSP से कहा, "मैं आपके हाथ जोड़ रहा हूं, पैर पकड़ रहा हूं। अगर आप नहीं आते तो सीआई को बिना कपड़ों के घर भेजना पड़ता। थाने को दलालों का अड्डा बना रखा है। गरीब आदिवासियों के केस में पैसे लेकर कार्रवाई नहीं करते।" उन्होंने आरोप लगाया कि सीआई भू-माफियाओं और बजरी माफिया से पैसे लेकर एजेंटों के माध्यम से काम कर रहे हैं। साथ ही रोहित कुमार वासु नामक कांस्टेबल को दलाल बनाकर मुंशी की जिम्मेदारी दे दी गई है। मीणा ने कहा, "विधायक की बात नहीं सुनी जा रही, तो आम आदमी की कौन सुनेगा?" उन्होंने चेतावनी दी कि यदि भू-माफिया तनुज पंड्या और अन्य आरोपियों पर कार्रवाई नहीं हुई, तो वे फिर से धरने पर बैठेंगे। उन्होंने DSP से पूछा, "तनुज के खिलाफ केस क्यों नहीं हुआ? मुझसे जवाब दो, वरना बाहर आकर फिर धरने पर बैठूंगा।" विधायक के तीखे तेवरों और आरोपों के बीच डीएसपी ने जांच और कार्रवाई का आश्वासन दिया। हालांकि, विधायक का कहना था कि बार-बार चेतावनी देने के बावजूद पुलिस न तो कार्रवाई कर रही है और न ही जानकारी दे रही है। यह पूरा घटनाक्रम अब जिले में कानून-व्यवस्था, प्रशासन की निष्पक्षता और राजनीतिक हस्तक्षेप को लेकर चर्चा का विषय बन गया है।

जयपुर में 'ज्योणार' भोज का भव्य आयोजन, 50 हजार लोगों ने लिया परंपरागत व्यंजनों का स्वाद

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) रविवार को जयपुर में रियासतकालीन परंपरा को फिर से जीवंत करते हुए 'जयपुर की ज्योणार' का आयोजन हुआ, जिसमें 50 हजार से अधिक लोगों ने पारंपरिक व्यंजनों का स्वाद लिया। यह भव्य आयोजन सांगानेरी गेट के पास अग्रवाल कॉलेज ग्राउंड में किया गया, जहां तीन वाटरप्रूफ डोम में एक साथ 4000 लोगों के बैठने की व्यवस्था की गई थी। भोजन में देसी घी की दाल, बाटी, चूरमा और मिर्ची के टिपोरे परोसे गए। जयपुर हेरिटेज महापौर कुसुम यादव ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और स्वयं लोगों को भोजन परोसा। आयोजन स्थल पर जयपुर की कला, हस्तशिल्प और इतिहास को दर्शाती झांकियां भी सजाई गईं। भोजन तैयार करने में 500 हलवाइयों की टीम तीन दिन से जुटी थी। हर घंटे 25 हजार बाटी बनाई गई, जिनके लिए 20 क्विंटल कंडे लाए गए। कुल 1000 किलो दाल, 2000 किलो दही की कढ़ी, 4000 किलो आटे और 500 किलो बेसन से चूरमा तैयार किया गया। कुल 260 पीपे घी का उपयोग हुआ। आयोजन समिति के कैलाश मित्तल ने बताया कि व्यापारियों ने समाजिक सहयोग से यह कार्यक्रम आयोजित किया। 50 हजार लोगों को 20 रुपए टोकन मनी लेकर कूपन बांटे गए थे। कार्यक्रम में सुरक्षा के लिए 100 पुलिसकर्मी, 100 प्राइवेट गार्ड और 500 वॉलंटियर तैनात रहे। पार्किंग के लिए रामनिवास बाग, संजय बाजार और घाटगेट क्षेत्र में विशेष इंतजाम किए गए। 250 साल पुरानी परंपरा को पुनर्जीवित करने के इस प्रयास को लोगों ने भरपूर सराहा। लकी ड्रा के तहत टीवी, फ्रिज, कूलर, मिक्सर और चांदी के सिक्कों जैसे इनाम भी दिए गए। आयोजन को हर साल नियमित रूप से करने की बात महापौर ने कही।

सीकर की 'संविधान बचाओ रैली' में दिखा कांग्रेस का जोश, डोटासरा बोले- उपराष्ट्रपति RSS की भाषा बोलते हैं

जयपुर टाइम्स

सीकर(निसं.) सीकर जिले के धोद में रविवार को आयोजित 'संविधान बचाओ रैली' में कांग्रेस के दिग्गज नेताओं ने मंच से जोरदार भाषण दिए और भाजपा पर तीखे राजनीतिक हमले किए। कार्यक्रम का सबसे भावुक और दिलचस्प पल तब आया, जब नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा का हाथ पकड़कर मंच पर मशहूर गीत 'तेरे जैसा यार कहां, कहां ऐसा याराना' गाया। माहौल पूरी तरह ऊर्जा से भर गया जब डोटासरा ने कार्यकर्ताओं के साथ 'तेजल सुपर डूपर' गाने पर गमछा लहराते हुए डांस भी किया। रैली में अपने संबोधन में डोटासरा ने उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ पर निशाना साधते हुए कहा कि वह आरएसएस की भाषा बोलते हैं और अपने संवैधानिक पद की मर्यादा को भूल रहे हैं। उन्होंने कहा, "उपराष्ट्रपति को कौन अधिकार देता है कि वह संविधान बदलने की बात करें, जिसने हमें आरक्षण, अभिव्यक्ति की आज़ादी और मौलिक अधिकार दिए हैं।" डोटासरा ने यह भी कहा कि अगर वह राष्ट्रपति बनने की महत्वाकांक्षा रखते हैं, तो भ्रम पैदा करके वह उस रास्ते को दूषित न करें। उन्होंने कोटा में धनखड़ द्वारा कोचिंग की तुलना गुरुकुल से करने पर आपत्ति जताते हुए कहा कि शेखावाटी से उपराष्ट्रपति बनने का गौरव प्राप्त करने वाले धनखड़ को पूर्व उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत से सीख लेनी चाहिए, जिन्होंने कभी भी पद की गरिमा से नीचे उतरकर बयान नहीं दिए। मीडिया से बातचीत करते हुए नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को निशाने पर लिया। उन्होंने कहा कि "75 साल में यह पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने अमेरिका के आगे घुटने टेक दिए। सेना पीओके को अपने में मिलाने के लिए तैयार थी, लेकिन सरकार ने उसका मनोबल गिराया। मोदी जी सरेंडर हो गए, यह इतिहास में पढ़ाना चाहिए।" जूली ने अटल बिहारी वाजपेयी, चंद्रशेखर, गुजराल और देवगौड़ा जैसे प्रधानमंत्रियों की तुलना करते हुए कहा कि उनमें कभी झुकने की प्रवृत्ति नहीं थी, लेकिन वर्तमान प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय स्वाभिमान से समझौता किया। सफाई कर्मचारी भर्ती को लेकर भी टीकाराम जूली ने भाजपा सरकार को घेरा। उन्होंने कहा कि सदन के सभी 200 सदस्य इस भर्ती के पक्ष में थे और वाल्मीकि समाज को प्राथमिकता देने पर सहमति थी, लेकिन सरकार की मंशा साफ नहीं है। "जब तक नीयत साफ नहीं होगी, तब तक भर्ती संभव नहीं है," उन्होंने दो टूक कहा। रैली में डोटासरा और जूली के बयानों से साफ है कि कांग्रेस अब खुलकर भाजपा सरकार की नीतियों और कार्यशैली को चुनौती देने की रणनीति पर काम कर रही है।

जयपुर के रामगंज में दो पक्षों के बीच पथराव, 11 आरोपी गिरफ्तार; महिला पर टिप्पणी से बढ़ा विवाद

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) शहर के रामगंज थाना क्षेत्र में शनिवार देर रात दो पक्षों के बीच जमकर पथराव हुआ। घटना की शुरुआत एक महिला पर की गई आपत्तिजनक टिप्पणी से हुई, जिसके बाद दोनों पक्ष आमने-सामने आ गए। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर हालात को काबू में किया और अब तक 11 लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया है। रविवार को पथराव का वीडियो सामने आया है, जिसमें कुछ लोग कांच की बोतलें फेंकते नजर आ रहे हैं। रामगंज के पहाड़गंज इलाके में महिला के पति ने जब टिप्पणी करने वाले युवकों को टोका, तो उन्होंने उस पर हमला कर दिया। देखते ही देखते दोनों पक्षों के बीच विवाद इतना बढ़ा कि एक पक्ष ने घर से बैग में रखी कांच की बोतलें निकालकर दूसरे पक्ष पर फेंकनी शुरू कर दी। कॉलोनी की एक बच्ची ने घटना का वीडियो बनाते हुए चिल्लाना शुरू कर दिया, जो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। आसपास के सीसीटीवी फुटेज भी पुलिस द्वारा खंगाले जा रहे हैं। रामगंज थानाधिकारी सुभाष यादव ने बताया कि सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची और 11 लोगों को गिरफ्तार किया गया। एफआईआर दर्ज कर ली गई है, जिसमें कॉलोनी के युवकों पर महिला पर टिप्पणी करने और विवाद शुरू करने का आरोप लगाया गया है। घटना के बाद इलाके में भारी पुलिस जाब्ता तैनात किया गया है। रामगंज और आसपास के क्षेत्रों में लगातार गश्त की जा रही है। डीसीपी नॉर्थ राशि डोगरा ने बताया कि 5 मिनट के भीतर पुलिस मौके पर पहुंच गई थी, किसी के घायल होने की सूचना नहीं है और स्थिति अब पूरी तरह नियंत्रण में है। पुलिस ने नागरिकों से शांति बनाए रखने और किसी भी अफवाह पर ध्यान न देने की अपील की है। गिरफ्तार किए गए आरोपियों से पूछताछ जारी है और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

जयपुर में मुस्लिम समाज का 24वां प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित, 250 मेधावी छात्र-छात्राएं हुए सम्मानित

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) प्रांतीय मुस्लिम तेली महापंचायत राजस्थान और आर्को ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज एंड सर्विसेज के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को हज हाउस, जयपुर में 24वां प्रतिभा सम्मान समारोह भव्य रूप से आयोजित किया गया। इस समारोह में 10वीं और 12वीं कक्षा में 85 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले 250 होनहार छात्र-छात्राओं को मेडल, सर्टिफिकेट और नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद विधायक रफीक खान ने कहा कि "ऐसे आयोजनों से पूरे समाज में सकारात्मक संदेश जाता है। जब कोई बच्चा मेरिट में आता है, तो उसका सम्मान सिर्फ उसी का नहीं बल्कि उसके परिवार, शिक्षकों और समाज का भी होता है। इससे उसे आगे बढ़ने का आत्मविश्वास मिलता है।" उन्होंने आयोजकों को इस सतत प्रयास के लिए बधाई दी और समाज से बच्चों की शिक्षा में अधिक सहयोग देने की अपील की। कार्यक्रम के संयोजक अब्दुल लतीफ आर्को ने बताया कि "हम बीते 24 वर्षों से यह सम्मान समारोह आयोजित कर रहे हैं। इसका उद्देश्य समाज के बच्चों को शिक्षा के प्रति प्रेरित करना है। सम्मान मिलने से बच्चों का आत्मबल बढ़ता है और वे आगे की पढ़ाई के लिए अधिक गंभीर हो जाते हैं।" इस अवसर पर पूर्व शिक्षा मंत्री पंडित बृज किशोर शर्मा, किशनपोल विधायक अमीन कागजी और अल्पसंख्यक आयोग के चेयरमैन एमडी चौपदार भी मंच पर उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने समाज के शिक्षित और प्रतिभाशाली युवाओं को बधाई दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। समारोह में उपस्थित अभिभावकों और छात्रों में उत्साह और गौरव का भाव देखने को मिला। आयोजन ने यह संदेश दिया कि शिक्षा ही समाज के उत्थान का सबसे सशक्त माध्यम है।

चौमूं के लक्ष्मीनाथ मंदिर में चोरी, चांदी का छत्र और आरती मशीन ले गए चोर

जयपुर टाइम्स

चौमूं(निसं.) चौमूं थाना क्षेत्र के जाहोता गांव स्थित लक्ष्मीनाथ मंदिर में चोरों ने बीती रात धावा बोलते हुए मंदिर का दरवाजा तोड़कर चांदी का छत्र, आरती मशीन, पूजा बर्तन और अन्य सामग्री चुरा ली। घटना का पता सुबह पुजारी के मंदिर पहुंचने पर चला। सूचना मिलते ही चौमूं थाना पुलिस मौके पर पहुंची और मंदिर परिसर का निरीक्षण किया। पुलिस चोरों की पहचान के लिए आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है। चोरी की घटना से ग्रामीणों में आक्रोश है। उन्होंने मंदिरों की सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने और रात्रिकालीन गश्त बढ़ाने की मांग की है। थाना प्रभारी प्रदीप शर्मा ने बताया कि अज्ञात चोरों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है और चोरी गए सामान की बरामदगी के लिए प्रयास जारी हैं।

गुरुकुल में संदिग्ध हालत में 2 स्टूडेंट की मौत, साथियों के साथ बरामदे में सोए थे दोनों

धौलपुर(निसं.)

धौलपुर में गुरुकुल में संदिग्ध हालत में 2 बच्चों की मौत हो गई। दोनों अपने साथियों के साथ गुरुकुल के बरामदे में सोए हुए थे। बरामदे के पास बिल से सांप को भी पकड़ा गया है। मामला कोतवाली थाना इलाके के मचकुंड रोड स्थित शिवानंद आश्रम में संचालित श्री जय गुरुदेव शंकराचार्य वेद विज्ञान संस्थान का है। कोतवाली थाने के सब इंस्पेक्टर अशोक कुमार ने बताया कि दोनों छात्रों की पहचान सातवीं कक्षा के विवेक शर्मा (11) पुत्र स्वर्गीय हरि ओम निवासी चितौरा थाना कोलारी और अमित शर्मा (14) पुत्र दीपा निवासी कैंथरी के रूप में हुई है। दोनों छात्र यहां आचार्य शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। सब इंस्पेक्टर अशोक कुमार ने बताया कि संस्थान में छोटे बच्चों को वेद ज्ञान दिया जाता है। रात को गुरुकुल आश्रम में पढ़ने वाले अमित (14) पुत्र दीपा निवासी केथरी, विवेक (11) पुत्र स्वर्गीय हरि ओम निवासी चितौरा थाना कोलारी, प्रियांशु (10), प्रांजल (12), मंगल पांडे (20) पुत्र भगवान दास निवासी भांतिपुरा, विवेक शुक्ला (38) पुत्र शिव मूर्ति निवासी शाहपुर गांव जिला प्रतापगढ़ और संतोष (36) पुत्र जगदीश निवासी पुरानी सराय धौलपुर बरामदे में सोए हुए थे। सब इंस्पेक्टर अशोक कुमार ने बताया कि रात करीब 3 बजे विवेक शुक्ला को आस-पास में सांप होने का एहसास हुआ।

बोझ के बजाय सुगमता बढ़ाएं कानून

मैट्रोलोजी कानून यानी 'विधिक माप-विज्ञान अधिनियम' का मूल उद्देश्य उपभोक्ताओं के हितों की सुरक्षा है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सामान का वजन और माप सही हो। यह कानून सुनिश्चित करता है कि जब आप कुछ खरीदते हैं तो आपको उतनी ही मात्रा या माप की वस्तु मिले, जितनी पैकेट पर लिखी हुई है। प्री-पैक्ड वस्तुओं की लेबलिंग के मामले भी इसी के अंतर्गत आते हैं। जैसे प्रोडक्ट का नाम, वजन और निर्माता की जानकारी आदि। इस कानून के तहत ऐसे व्यवसाय, जो वजन और माप संबंधी उपकरण बनाते, बेचते, आयात या मरम्मत करते हैं, उन्हें लाइसेंस प्राप्त करना भी अनिवार्य है। भले ही किसी व्यवसाय का गलत इरादा न हो, पर यह कानून व्यवसायों पर बड़ा बोझ डालता है। हमने इस संदर्भ में कुछ चुनौतियों और उनके समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। पहला, हमारी मौजूदा लेबलिंग आवश्यकताएं अत्यंत जटिल हैं

दिग्गज फैशन ब्रांड एचएंडएम को 2016 में एक स्वेटर का माप 1.22 मीटर के बजाय 122 सेंटीमीटर बताना महंगा पड़ गया। इस कारण उस पर आपराधिक मुकदमा दर्ज हुआ। इसी तरह ब्रिटानिया पर भी मैट्रोलोजी कानून यानी माप से जुड़े कानून के तहत एक थोक बाक्स पर 120 एन या 120 यू के बजाय '120 पैक्स' लिखने के लिए मुकदमा चलाया गया।

लेबलिंग नियमों के उल्लंघन पर आइटीसी को मध्य प्रदेश में छह साल तक कानूनी लड़ाई लड़नी पड़ी, क्योंकि उसने अरहर दाल के पैकेट पर एक साधारण वाक्यांश 'जब पैक किया गया' लिख दिया, जो तय नियमों में नहीं आता था। ये कुछ मिसालें हैं, जो मैट्रोलोजी कानूनों की जटिलताओं के चलते कानून व्यवस्था पर पड़ने वाले अनावश्यक बोझ को दर्शाती हैं। इसका अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि 2021-22 में ही अप्रमाणित वजन और माप की वजह से 35,840 मामले दर्ज किए गए।

मैट्रोलोजी कानून यानी 'विधिक माप-विज्ञान अधिनियम' का मूल उद्देश्य उपभोक्ताओं के हितों की सुरक्षा है, ताकि सुनिश्चित किया जा सके कि सामान का वजन और माप सही हो। यह कानून सुनिश्चित करता है कि जब आप कुछ खरीदते हैं तो आपको उतनी ही मात्रा या माप की वस्तु मिले, जितनी पैकेट पर लिखी हुई है। प्री-पैक्ड वस्तुओं की लेबलिंग के मामले भी इसी के अंतर्गत आते हैं। जैसे प्रोडक्ट का नाम, वजन और निर्माता की जानकारी आदि। इस कानून के तहत ऐसे व्यवसाय, जो वजन और माप संबंधी उपकरण बनाते, बेचते, आयात या मरम्मत करते हैं, उन्हें लाइसेंस प्राप्त करना भी अनिवार्य है। भले ही किसी व्यवसाय का गलत इरादा न हो, पर यह कानून व्यवसायों पर बड़ा बोझ डालता है। हमने इस संदर्भ में कुछ चुनौतियों और उनके समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

पहला, हमारी मौजूदा लेबलिंग आवश्यकताएं अत्यंत जटिल हैं और मौजूदा नियमों में बहुत ही सूक्ष्म निर्देश दिए गए हैं। उदाहरण के रूप में अंकों की माप, शब्दों की ऊंचाई और चौड़ाई और लेबल का आकार आदि। हमें अंक, शब्दों की माप, पैकेजिंग कवर के प्रतिशत आदि से संबंधित निर्धारित आवश्यकताओं से हटकर व्यावहारिक मापदंडों का उपयोग करना चाहिए। जैसे लेबल स्पष्ट रूप से चिह्नित हो, प्रमुखता से दिखाई दे और आसानी से पढ़ा जा सके और यदि विस्तृत जानकारी की आवश्यकता है तो उसे क्विक-रिस्पांस यानी क्यूआर कोड से जोड़ा जा सकता है। कुछ इलेक्ट्रानिक उत्पादों और दवाओं में ऐसा किया भी जाता है, ताकि ग्राहक सही जानकारी हासिल कर सकें। दूसरा, जिन उत्पादों के लिए आम तौर पर मीट्रिक प्रणाली का प्रयोग नहीं किया जाता है, वहां अन्य उपयोग स्वीकार किए जाने चाहिए। ऐसा न करने से भ्रम की स्थिति पैदा होती है। जैसे लैपटाप और मोबाइल के लिए कानून के अनुसार सेंटीमीटर में माप दी जानी चाहिए, लेकिन इसके लिए चलन इंच में माप देने का है। ऐसे में यदि किसी उत्पाद को सामान्यतः गैर-मीटरिक इकाइयों में मापा जाता है, तो उनके उपयोग की अनुमति दी जानी चाहिए। वर्तमान में, लीगल मेट्रोलाजी एक्ट के तहत दर्ज किए गए कुल उल्लंघनों में लगभग 10 प्रतिशत मामले गैर-मानक इकाइयों के उपयोग से जुड़े हैं, जो कानून व्यवस्था पर बोझ डालने का काम करते हैं। तीसरा, इस अधिनियम में कई उल्लंघनों के लिए अभी भी आपराधिक दंड का प्रविधान है। इससे अधिकारियों को अनुचित लाभ के लिए दबाव बनाने का मौका मिलता है और व्यवसायों के लिए मुश्किलें बढ़ जाती हैं। इसलिए अधिनियम के किसी भी उल्लंघन को आपराधिक श्रेणी से बाहर किया जाना चाहिए। हालांकि जन विश्वास अधिनियम ने दंड के दायरे को सीमित किया है, फिर भी मामूली अपराधों के लिए एक साल तक की सजा का प्रविधान अब भी मौजूद है। जबकि इसके बजाय केवल सुधारात्मक आदेश और आर्थिक दंड लगाया जाए।

चौथा, फिलहाल कंपनियों को वजन और माप के लिए एक अलग लाइसेंस प्राप्त करना अनिवार्य है जो पहले से ही मौजूद जटिल प्रक्रियाओं को और बोझिल बनाते हैं। हर राज्य के अपने नियम-कानून हैं और ऐसे उपकरणों के लिए भी लाइसेंस लेना पड़ता है, जिन्हें पहले से अनिवार्य बीआइएस प्रमाण मिला हुआ है। जो निर्माता पहले से ही दुकानों और प्रतिष्ठान अधिनियम, फैक्ट्री अधिनियम, जीएसटी और अन्य कानूनों के तहत पंजीकृत हैं, उन्हें भी एक अलग 'पैकर/निर्माता' के रूप में पंजीकरण कराना पड़ता है। एमएसएमई और स्टार्टअप्स के लिए यह प्रक्रिया लागत और समय दोनों बढ़ाती है। यह सही नहीं है। हमें इस प्रक्रिया को सरल बनाने और इसे अन्य मौजूदा लाइसेंसों के साथ जोड़ने पर काम करना चाहिए ताकी समय और पैसे दोनों की बचत हो सके। हमारी मंशा इस कानून को रद करने की नहीं, बल्कि उसे सरल-सहज और व्यवसायों के और अनुकूल बनाने की है। बाजार में लेन-देन और उपभोक्ताओं के हितों की सुरक्षा जरूरी है, लेकिन हमें यह भी सोचना चाहिए कि नियम, कानून और परमिट किस हद तक सही हैं और ये व्यवसायों के लिए परेशानी न बनें।

सम्पादकीय

अंतरिक्ष तक पहुंचने वाले देश में ही हैं रूढ़िवादी लोग

अंतरिक्ष में पांव रख चुके भारत में आज भी कई तरह की रूढ़ियां आम दिखती हैं, तो इसकी वजह यही है कि हम कई मामलों में मानसिक रूप से दशकों पीछे जी रहे हैं। अन्यथा एक प्रगतिशील समाज में और वह भी स्कूल जैसी जगह पर माहवारी की जांच के नाम पर स्कूली छात्राओं के कपड़े नहीं उतरवाए जाते। इससे अधिक अफसोसनाक बात क्या हो सकती है कि ठाणे जिले के जिस विद्यालय में पढ़ने वाली बच्चियों को भावनात्मक रूप से ठेस पहुंचाया गया, वहां प्रधानाचार्य खुद एक महिला हैं। परिसर में उनके रहते यह सब हुआ। विचित्र यह है कि शौचालय में फर्श पर खून के धब्बे होने की जानकारी के बाद जहां प्रधानाचार्य और अन्य शिक्षिकाओं को बेहद संवेदनशील तरीके से पेश आने की जरूरत थी, वहां बच्चियों को न केवल स्कूल सभागार में बुलाया गया, बल्कि सार्वजनिक रूप से उनसे यह पूछा गया कि क्या उनमें से कोई मासिक धर्म चक्र से गुजर रही है। जिन छात्राओं ने इनकार किया, उनकी अभद्र तरीके से जांच की गई। निस्संदेह बच्चियों से यह व्यवहार अक्षम्य है, इसलिए महाराष्ट्र सरकार ने उचित कार्रवाई की और इस मामले में प्रधानाचार्य सहित एक महिला कर्मी को गिरफ्तार किया गया। पूरे मामले की जांच के आदेश भी दिए गए है। इससे बड़ी विडंबना क्या होगी कि महिलाओं के जिस प्राकृतिक चक्र या अवस्था को समझने-जानने और बच्चियों को उचित तरीके से शिक्षित करने की जरूरत है, वहां स्कूल जैसी जगह में भी उनके साथ ऐसा बर्ताव किया जाता है, जिससे इस अवस्था के प्रति कम उम्र की लड़कियों के भीतर नाहक आशंका पैदा होती है। ठाणे के स्कूल में माहवारी की जांच के नाम पर जिन बच्चियों के साथ अवांछित हरकत की गई, उनके मन-मस्तिष्क पर इसके असर का अंदाजा लगाया जा सकता है। पारंपरिक जड़ता के घेरे में घरों-परिवारों में महावारी के दौरान लड़कियों के प्रति कई तरह के दुराग्रह पहले ही मौजूद रहे हैं।

मतदाता सूची के सत्यापन पर व्यर्थ का शोर

बिहार में आगामी विधानसभा चुनावों के पहले चुनाव आयोग ने राज्य में मतदाता सूची के सत्यापन अर्थात पुनरीक्षण की जो पहल की, उस पर कांग्रेस, राजद समेत अनेक विपक्षी दलों ने आसमान सिर पर उठा लिया। इन दलों ने यह बताने की कोशिश की कि चुनाव आयोग कोई अनुचित, अनावश्यक और असंवैधानिक काम कर रहा है। उन्होंने चुनाव आयोग के साथ मोदी सरकार पर भी तमाम आरोप लगाए। उनके हिसाब से चुनाव आयोग मतदाता सूची का सत्यापन मोदी सरकार के कहने पर कर रहा है और उसका इरादा किसी न किसी प्रकार भाजपा को चुनावी लाभ पहुंचाना है। राहुल गांधी ने चुनाव आयोग की इस पहल को महाराष्ट्र के विधानसभा चुनाव में हुई तथाकथित हेराफेरी से भी जोड़ा। वह बार-बार यह घिसा-पिटा आरोप दोहरा रहे हैं कि महाराष्ट्र में चुनाव आयोग ने भाजपा को लाभ पहुंचाने के लिए धांधली करवाई। इन आरोपों का चुनाव आयोग ने विस्तार से जवाब दिया है, लेकिन राहुल गांधी और उनके साथ कई विपक्षी नेता सच का सामना करने को तैयार नहीं दिख रहे हैं। साफ है कि उनके साथ कांग्रेस यह समझने को तैयार नहीं कि उनकी राजनीतिक जमीन कमजोर हो रही है और इसके लिए वे चुनाव आयोग पर दोष मढ़कर कुछ हासिल नहीं कर सकते। मतदाता सूची का सत्यापन कोई नई बात नहीं है। बिहार में ही इसके पहले 2003 में मतदाता सूची का सत्यापन हुआ था। अन्य राज्यों की तरह बिहार में भी मतदाता बढ़े हैं। बिहार के लाखों लोग रोजगार के सिलसिले में बाहर जाते हैं और कुछ तो वहीं स्थाई रूप से बस जाते हैं। इस तथ्य की भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि बांग्लादेश से होने वाली अवैध घुसपैठ से पश्चिम बंगाल और पूर्वोत्तर के राज्यों के साथ-साथ झारखंड और बिहार भी प्रभावित हैं। मतदाता सूची के सत्यापन से न केवल बिहार के वैध-वास्तविक मतदाताओं का पता चलेगा, बल्कि इसकी भी जानकारी हो सकेगी कि कहीं अवैध बांग्लादेशी बिहार में मतदाता तो नहीं बन गए हैं? आखिर जब वे बंगाल में बन सकते हैं तो बिहार में भी इसकी आशंका है। चुनाव आयोग ने स्पष्ट किया है कि मतदाता सूची का सत्यापन निष्पक्ष चुनाव की बुनियादी शर्त है। यदि समय-समय पर इसकी पड़ताल की जाती रहे कि वास्तविक मतदाता कौन हैं और वे कहां रह रहे हैं तो इसमें क्या हर्ज है? शायद ऐसे ही जायज सवालों के कारण चुनाव आयोग की पहल के खिलाफ जिन राजनीतिक दलों और लोगों ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया, उन्हें निराशा ही हाथ लगी। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग की पहल पर रोक लगाने से इन्कार कर दिया। इतना अवश्य रहा कि उसने चुनाव आयोग को मतदाताओं के सत्यापन के लिए आधार, राशन कार्ड, वोटर आइडी को भी इस्तेमाल करने का सुझाव दिया। यह ठीक ही है कि चुनाव आयोग सुप्रीम कोर्ट के सुझाव पर अमल करने को तैयार है। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि चुनाव आयोग का काम नागरिकता तय करना नहीं है। हालांकि चुनाव आयोग का इस संदर्भ में यह कहना था कि हर मतदाता को भारतीय नागरिक होना चाहिए, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने साफ किया कि नागरिकता तय करने का काम गृह मंत्रालय का है। कुल मिलाकर सुप्रीम कोर्ट का फैसला सही है। यह फैसला चुनाव आयोग की अनावश्यक आलोचना करने वालों को आईना दिखाने वाला है। उसने व्यर्थ की राजनीति करने वालों को सबक सिखाने का ही काम किया। चुनाव प्रक्रिया और चुनाव आयोग पर सवाल पहले भी उठाए जाते रहे हैं। हाल के समय में सबसे ज्यादा सवाल ईवीएम पर उठे हैं। सवाल उठाने वाले दलों में कांग्रेस सबसे आगे है, जबकि उसके समय में ही ईवीएम पर अमल शुरू हुआ। केंद्र की सत्ता से बाहर होने के बाद कांग्रेस लगातार यह साबित करने की कोशिश कर रही है कि भाजपा ईवीएम में कुछ गड़बड़ी कराकर चुनाव जीत रही है। वह और उसके सहयोगी राजनीतिक दल जब ऐसे आरोप लगाते हैं तो यह भूल जाते हैं कि वे भी तो चुनाव जीतते रहते हैं। उन्होंने झारखंड में चुनावी जीत हासिल की थी। कांग्रेस यह देखने को तैयार नहीं कि उसके और सहयोगी दलों के प्रत्याशी जितने अंतर से चुनाव हारते हैं, उतनी संख्या में अवैध वोट नहीं डलवाए जा सकते। कोई भी प्रक्रिया अपने आप में संपूर्ण नहीं हो सकती। चुनाव प्रक्रिया में भी कुछ कमियों या विसंगतियों का उल्लेख किया जा सकता है, लेकिन यह हर कोई मानेगा कि समय के साथ भारत की चुनाव प्रक्रिया में सुधार हुआ है और इसी कारण चुनाव आयोग की दुनिया भर में प्रतिष्ठा बढ़ी है।

खौफ की दुनिया

बल्कि इनके अपराधों का शिकार होकर इनका जवाब देने, इन्हें बेनकाब करने के बजाय उल्टे शिशु मृग-सी आंखें चुरा कर हम स्त्रियां खुद ही छिपने लगती हैं। ऐसे मामले आम हैं जिनमें ऐसे घिनौने कृत्यों के बाद पीड़ित बच्ची को ही चुप रहने की हिदायत दी जाती है, यह कह कर कि बात खुली तो परिवार की इज्जत खराब हो जाएगी। कुंठा ऐसी कि झट से कह दिया जाता है कि लड़कियां शरीर दिखाने वाले कपड़े पहनती हैं तो निशाने पर आएंगी। लेकिन घरों में समूचे शारीरिक अंगों को ढकने के बाद भी,

हमारे आसपास लोगों के मुंह से ऐसे 'आशीर्वचन' आम हैं कि 'जीते रहो, दूध-बताशे पीते रहो', 'दूधो नहाओ, पूतो फलो'। ऐसे 'आशीर्वचन' हम औरतें बुजुर्ग होकर भी कभी बेटी के फलने फूलने को लेकर फूटे मुंह से भी नहीं बोल पातीं। पिछले कई वर्षों से बलात्कार के मामलों को तेजी से बढ़ते देखा। छह महीने की उम्र से लेकर पांच साल या उससे भी कम उम्र की बच्चियों से बलात्कार और बर्बरता के चरम के रूह कंपा देने वाले ब्योरे पढ़े-सुने। युवतियों के खिलाफ असामाजिक तत्त्वों के साथ-साथ नजदीकी रिश्तेदारों और यहां तक कि सौतेले बाप, भाई, प्रेमी तक के अपराध ने दिल दहला दिया। 'कसूर' महज उनका स्त्री होना। नाबालिग या बालिग- सभी महिलाएं इस तरह की क्रूरता को झेल रही हैं। बहुत-से ऐसे भी मामले हैं जो गड़े पड़े रह जाते हैं। बाप, भाई, पड़ोसी, रिश्तेदार, ससुर, जेठ, देवर आदि से होने वाले शारीरिक शोषण के विरुद्ध उठी आवाज को अभी वह इज्जत नहीं मिली है, जो किसी स्त्री के भीतर थोड़ी हिम्मत भरे। ऐसे मामले सामने आने पर आमतौर पर उसके मौखिक भयाक्रांत परिणाम सुना कर ही दबा दिया जाता रहा है। हम ही जन्म देती हैं ऐसे लोगों को और ये हमें ही नहीं बख्शते। मुझे लगता है कि कमी हममें है जो ऐसे लड़कों या पुरुषों की अपने ऊपर आपराधिक दृष्टि का आभास होते हुए भी समय पर इन्हें समाज के कठघरे में नहीं खड़ा करतीं। बल्कि इनके अपराधों का शिकार होकर इनका जवाब देने, इन्हें बेनकाब करने के बजाय उल्टे शिशु मृग-सी आंखें चुरा कर हम स्त्रियां खुद ही छिपने लगती हैं। ऐसे मामले आम हैं जिनमें ऐसे घिनौने कृत्यों के बाद पीड़ित बच्ची को ही चुप रहने की हिदायत दी जाती है, यह कह कर कि बात खुली तो परिवार की इज्जत खराब हो जाएगी। कुंठा ऐसी कि झट से कह दिया जाता है कि लड़कियां शरीर दिखाने वाले कपड़े पहनती हैं तो निशाने पर आएंगी। लेकिन घरों में समूचे शारीरिक अंगों को ढकने के बाद भी, पूरे भारतीय परिधान वाली औरतें भी कहां नहीं पुरुषों की हवस का शिकार बनती हैं! खेत-खलिहानों, सरेआम बाजारों, अंधेरे बंद कमरों या कोठरियों में..! पीछे मुड़ कर देखने से क्या लाभ! जो सबको याद हो, वही बात करते हैं। न उसने छोटी स्कर्ट पहन रखी थी, न वह किसी पुरुष मित्र के साथ आधी रात को कहीं से आ रही थी, न वह बच्ची थी। वह किसी की बीवी थी, बहन थी, बेटी थी। वह कमजोर परिवार से थी, दलित थी। उसे जिस बर्बरता का शिकार होना पड़ा, वह कल्पना भी दहलाती है। हां, थानागाजी जैसी रोंगटे खड़े कर देने वाली शर्मनाक घटना इसी दौर में घटी। सामूहिक बलात्कार, बर्बरता और असभ्यता का चरम। वीडियो बना कर बाद में भी शोषण-दमन। लानत है ऐसे मर्दों पर जो इस प्रकार के कुकृत्य करते हैं। लेकिन कुछ दिनों बाद हमारी-आपकी बुद्धिमता फिर नई घटना पर सोचने लगेगी। दुखद, शर्मनाक, ऐसा होना चाहिए, वैसा होना चाहिए जैसे विचार जाहिर कर हम तब तक के लिए शांत हो जाएंगे, जब तक वैसा ही नया कुछ न घट जाए। सच क्या है? औरतें सबसे ज्यादा असुरक्षित हैं देश में। सरेआम नोची जा रही हैं। समाज के अंधे-बहरे लोगों को चीखें भी सुनाई नहीं देतीं। उनके चेहरे पर कहीं शर्म नहीं दिखती। वे कब और किन हालात में समझने और तकलीफ महसूस करने की कोशिश करेंगे! वक्त का पहिया कभी भी घूम सकता है। अपराध में डूबे ऐसे मनचलों की यौवन-वितृष्णा ने स्त्रियों का हमेशा ही शोषण कर उनकी जुबान पर ताला जड़ने का काम किया है। देवालयों से लेकर वेश्यालय तक इनकी बेशर्मी और औरतों की चीखों के ऐतिहासिक गवाह रहे हैं। धर्म की आड़ में पनपता जिस्मानी धंधा 'मुंह में राम, बगल में छुरी' जैसा दृश्य सामने करता है। कार्यस्थलों पर अधिकारियों से लेकर सहयोगियों तक का बर्ताव छिपा नहीं है। दूसरा पक्ष यह है कि गरीबों के लिए उनकी गरीबी एक जानलेवा समस्या है। अबोधों को उनके अनजानेपन की वजह से शिकार बना लिया जाता है। संबंधी अपनेपन का फायदा उठा कर लड़कियों को चुप करा देते हैं। समझदारी वाली युवतियों के खिलाफ जबर्दस्ती। जाहिर है, मरना स्त्री को ही है। जिन 'कोठों' को समाज गंदा कहता है, 'नाइट बार' की कॉल गर्ल्स', देह-व्यापार में धकेली गई युवतियां- ये सब स्त्रियां इस आपराधिक मर्द जाति की देन हैं। कानून और प्रशासन आपराधिक नींद में सोता है। नतीजतन, ऐसे मामले थमने का नाम नहीं ले रहे।

भाजपा कार्यालय सह-प्रभारी बने प्रकाश हाटवाल, कार्यकर्ताओं ने बांधा साफा और किया जोरदार स्वागत

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) भाजपा जयपुर जिला देहात उत्तर की कार्यकारिणी विस्तार में जाटावाली के मालेरा निवासी प्रकाश हाटवाल को कार्यालय सह-प्रभारी बनाए जाने पर कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर दौड़ गई। इस अवसर पर बांसा मंडल के भाजपा कार्यकर्ताओं ने रविवार को हाटवाल के निवास पर पहुंचकर साफा व दुपट्टा ओढ़ाकर उनका भव्य अभिनंदन किया। कार्यकर्ताओं ने हाटवाल का मुंह मीठा करवा कर बधाइयां दीं। कार्यक्रम का नेतृत्व बांसा मंडल के पूर्व अध्यक्ष श्रीराम शर्मा ने किया। इस दौरान मौजूद सभी भाजपा कार्यकर्ताओं ने हाटवाल को पार्टी में दी गई इस नई जिम्मेदारी के लिए शुभकामनाएं दीं। प्रकाश हाटवाल ने कहा कि पार्टी ने जो भरोसा जताया है, उस पर वे पूरी निष्ठा से खरा उतरने का प्रयास करेंगे। साथ ही कार्यकर्ताओं की समस्याओं का समाधान करना उनकी प्राथमिकता में रहेगा। इस अवसर पर मंत्री रामकिशोर मीणा, उपाध्यक्ष विमल कुमार शर्मा, बूथ अध्यक्ष गिरधारीलाल जाट, पूर्व उपाध्यक्ष राकेश शर्मा, ग्यारसीलाल शर्मा, आईटी सेल प्रमुख मुकेश यादव, नंछुराम मीणा, छीतरमल मीणा, समाजसेवी जगदीश प्रसाद, मंडल मंत्री सांवरमल जाट व भूतपूर्व अध्यक्ष दौलत राम मीणा सहित कई कार्यकर्ता व पदाधिकारी उपस्थित रहे।

जोधपुर जिला बीजेपी उपाध्यक्ष बनने पर चोटिया का आत्मीय स्वागत

जयपुर टाइम्स

भोपालगढ़(निसं.)। जोधपुर जिला भारतीय जनता पार्टी के नव नियुक्त उपाध्यक्ष चोटिया का भोपालगढ़ क्षेत्र में पहुंचने पर भव्य और आत्मीय स्वागत किया गया। क्षेत्र के गणमान्य नागरिकों, भाजपा कार्यकर्ताओं और समाजजनों ने पारंपरिक तरीके से उनका स्वागत कर शुभकामनाएं दीं। विश्व हिंदू परिषद के मंडल अध्यक्ष बुधाराम देवासी, भारत, मोहन, जगदीश जयराम देवासी (रामनगर), रमेश देवासी (ओस्तरा) और खुम्माराम देवासी (गंगाणी) सहित अन्य प्रमुख जनों ने सम्मान प्रदान कर संगठन में उनके योगदान की सराहना की। चोटिया ने कहा कि यह सम्मान केवल उनका नहीं, बल्कि पूरे संगठन की निष्ठा और समर्पण का प्रतीक है। उन्होंने सभी शुभचिंतकों और कार्यकर्ताओं के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया और संगठन को और मजबूत करने का संकल्प दोहराया।

"मैं कौन हूं" विषय पर आयोजित हुई प्रतियोगिता

जयपुर टाइम्स

नांवासिटी(निसं.)। मारोठ कस्बे के पीएम श्री विद्यालय श्री ऋषभ चंद जैन गोधा राजकीय उच्च माध्यमिक के संस्था प्रधान केदारमल शर्मा ने बताया कि 21वीं सदी के कौशल विकास कार्यक्रम के प्रभारी मोहन राम के निर्देशन में छात्रों को कक्षा 6 से 8 व 9 से 12 के मध्य विभाजित करके प्रथम वर्ग के लिए मेरा परिचय और द्वितीय वर्ग के लिए मेरा आत्म परीक्षण विषय पर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले बच्चों ने अपना आत्म अवलोकन करते हुए अपने व्यक्तित्व की अच्छाइयों, कमियों और भविष्य के लक्ष्य को लेकर अपने विचार व्यक्त किए जिसमें छात्रा कोमल मीणा, सिमरन सैनी, रुकमा चौधरी, ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन सहप्रभारी हीरा बिष्ट ने किया। इस दौरान विद्यालय के स्टाफ विक्रम सिंह कर्णावत, जगदीश प्रसाद,मूलचंद जाट,फिरोज लोहार, सायर चंद,उदय राम, कृष्ण कुमार मीणा,सरोज कुमावत, पुष्पा देवी,छितरमल कुमावत,अर्जुनराम, सीमा पारीक आदि उपस्थित रहे।

आईएएस में पदोन्नति होने पर डॉ हरसहाय मीना व जुगल किशोर मीना का क्षेत्र में आगमन पर हुआ भव्य स्वागत कार्यक्रम

जमवारामगढ़ आगमन पर जगह जगह हुआ स्वागत

जयपुर टाइम्स

जमवारामगढ़(निसं.) क्षेत्र का नाम एक बार फिर प्रदेश में गौरव से लिया जा रहा है। क्षेत्र के दो होनहार प्रशासनिक अधिकारियों - डॉ. हरसहाय मीणा और जुगल किशोर मीणा - की आरएएस से आईएएस पद पर पदोन्नति होने पर रविवार को नायला कस्बे में एक भव्य अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। स्थानीय निवासियों द्वारा किए गए इस आयोजन ने एक जनउत्सव का रूप ले लिया। आईएएस डॉ. हरसहाय मीणा कानडियावाला गांव के निवासी हैं जबकि आईएएस जुगल किशोर मीणा कुसलपुरा गांव से हैं। दोनों अधिकारियों की पदोन्नति की खबर मिलते ही पूरे क्षेत्र में खुशी की लहर दौड़ गई। गांव-गांव से आए सैकड़ों लोगों ने नायला चौपड़ पर इन दोनों अधिकारियों का ढोल-नगाड़ों और फूलमालाओं के साथ भव्य स्वागत किया। जुलूस के दौरान "जय-जय मीणा समाज" और "हमारे गौरव आईएएस" जैसे नारों से पूरा कस्बा गूंज उठा। इस अवसर पर जगह-जगह मंच बनाकर अभिनंदन समारोह रखे गए थे, जहां स्थानीय लोगों, समाजसेवियों और जनप्रतिनिधियों ने दोनों अधिकारियों का माल्यार्पण कर अभिनंदन किया। समदर्शी मीना , नवरत्न मीना, जिला परिषद सदस्य विजय मीणा सहित समाज के कई गणमान्य लोग इस मौके पर मौजूद रहे। हजारों की संख्या में एकत्रित लोगों ने अपने गांव के बेटों की इस उपलब्धि पर गर्व व्यक्त किया। कार्यक्रम में वक्ताओं ने कहा, "यह हम सभी के लिए गर्व का क्षण है। डॉ. हरसहाय मीणा और जुगल किशोर मीणा जैसे अधिकारी हमारे युवाओं के प्रेरणास्रोत हैं।" वहीं, जिला परिषद सदस्य विजय मीणा ने कहा कि "इनकी सफलता ने पूरे समाज और क्षेत्र का नाम रोशन किया है।" डॉ. हरसहाय मीणा ने अपने संबोधन में भावुक होते हुए कहा कि "यह सम्मान मेरे लिए नहीं, पूरे जमवारामगढ़ क्षेत्र की मेहनत और आशीर्वाद का फल है।" उन्होंने युवाओं को मेहनत, ईमानदारी और संकल्प के साथ आगे बढ़ने का संदेश दिया। जुगल किशोर मीणा ने भी क्षेत्रवासियों का आभार जताते हुए कहा कि वे सदैव समाज के उत्थान और जनसेवा को प्राथमिकता देंगे। समारोह के अंत में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ, जिसमें स्थानीय कलाकारों ने देशभक्ति गीत और लोकनृत्य प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अंत में दोनों अधिकारियों को कैलो व लड्डुओं से तराजू में तोला गया। आयोजन समिति द्वारा सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट किए गए और क्षेत्र के युवाओं ने सेल्फी लेकर इस ऐतिहासिक पल को यादगार बनाया। यह आयोजन न केवल एक स्वागत समारोह था, बल्कि एक संदेश भी कि परिश्रम, शिक्षा और समर्पण से कोई भी बुलंदी हासिल की जा सकती है। इस मौके पर पूर्व प्रधान मंजू मीणा, जिला परिषद सदस्य विजय मीणा, पूर्व सरपंच समदर्शी मीणा, राजस्थान विश्वविद्यालय की पूर्व उपाध्यक्ष सुजाता मीणा, नवरत्न नवरत्न छांडवाल, रामकल्याण भावपुरा, पन्ना लाल मीणा, मूलचंद मीणा, फूलचंद घाटी, एसडीएम, रोहिताश,अमित , रमेश छाँड़वाल नायला , अभिषेक ब्याडवाल रायसर सहित हजारों लोग मौजूद रहे

कुमावत समाज विकास समिति, मिंडा द्वारा प्रतिभा एवं भामाशाह सम्मान समारोह आयोजित

प्रतिभाओं का सम्मान केवल प्रशंसा नहीं, बल्कि समाज के उज्ज्वल भविष्य में निवेश है - डॉ. देवीलाल दादरवाल

जयपुर टाइम्स

नांवा सिटी(निसं.)। कुमावत समाज विकास समिति, मिंडा के तत्वावधान में रविवार को भव्य प्रतिभा एवं भामाशाह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में समाज के उन छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया जिन्होंने वर्ष 2025 की बोर्ड परीक्षाओं में श्रेष्ठ अंक अर्जित किए, साथ ही उन युवाओं का भी अभिनंदन किया गया जिन्होंने विभिन्न राजकीय सेवाओं में चयन पाकर समाज को गौरवान्वित किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. देवीलाल दादरवाल ग्रुप चेयरमैन न्यू मॉडर्न एजुकेशन ग्रुप कुचामन सिटी उपस्थित रहे, जिन्होंने उद्बोधन में कहा कि– "प्रतिभाओं का सम्मान केवल प्रशंसा नहीं, बल्कि समाज के उज्ज्वल भविष्य में निवेश है। जो समाज अपनी जड़ों से जुड़ा रहकर शिक्षा, सेवा और संस्कारों को अपनाता है, वही प्रगति करता है।" डॉ. दादरवाल ने मंच से विद्यार्थियों को समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाने का संकल्प भी दिलाया और प्रेरित किया कि वे न केवल सफल नागरिक बनें, बल्कि समाज और राष्ट्र निर्माण में भागीदार भी बनें। पार्थ सीताराम जलान्द्रा टेक्स एसीस्टेंट, सुरेश मोतीराम राजोरिया आइटीबीपी, आकांक्षा लिखमाराम माचीवाल व दीपक सीताराम बड़ीवाल (कंप्यूटर अनुदेशक), कोमल व पूजा रामगोपाल कारगवाल बजरंग लाल व नरसी लाल सिरसवा (जेइ व स्टेनोग्राफर), खेमचंद नेमीवाल, अशोक कुमार जलान्द्रा, विजयकुमार राजोरिया, राजेन्द्र कुमार कारगवाल, अनीशा सिरसवा, गोपालकृष्ण सिरसवा, कमलेश नेमीवाल सहित कुल 15 युवा शामिल रहे। तनीषा छिछोलिया (91.40 प्रतिशत), जोया दंभीवाल, निकिता दंभीवाल, प्रिया सिरसवा (92.17 प्रतिशत), चेतना मारोठिया, विजयलक्ष्मी सिरसवा, हर्षित कारगवाल, अंजली दंभीवाल, कृतिका सिरसवा, चेतन राजोरिया, निशा व विकास सहित कुल 18 प्रतिभाएं सम्मानित हुईं।

राजनीतिक योगदान

पूर्व सरपंच नारायणी देवी और लक्ष्मणराम राजोरिया (जिला अध्यक्ष, शिवसेना - इंदौर) को समाज सेवा हेतु सम्मानित किया गया। इस दौरान मंचासीन अतिथि डॉ. देवीलाल दादरवाल, राजेन्द्र कुमावत, लक्ष्मणराम राजोरिया, भोलूराम छिछोलिया, पूराराम माचीवाल, मोतीराम मारवाल गिरधारी जलान्द्रा, नारायणी देवी आदि उपस्थित रहे। मंच संचालन भंवरलाल राजोरिया द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोगी कार्यकर्ता मोहनलाल जलान्द्रा, हीरालाल कारगवाल, मुकेश छिछोलिया, भरत राजोरिया, सोहन नेमीवाल, प्रेमाराम बड़ीवाल, अनिल, नरेश व जितेन्द्र जलान्द्रा, रामप्रसाद राजोरिया, पूराराम माचीवाल, बबलु राजोरिया, आर्यन सिरसवा, राकेश व सुनील मारोठिया, हितेश बड़ीवाल, बंशीलाल मारोठिया सहित अनेक समाजसेवियों का उल्लेखनीय सहयोग रहा। समारोह के समापन पर डॉ. दादरवाल ने समिति को सफल आयोजन हेतु बधाई देते हुए समाज के सर्वांगीण विकास में निरंतर योगदान की आवश्यकता बताई और भावी आयोजनों में हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया।

मांडल के बिड़ला परिवार का माहेश्वरी समाज नरैना ने भैराणा जी में किया स्वागत

नरैना(निसं)। पधारें हुए अतिथियों का स्वागत करना हमारी पौराणिक व सनातनी परंपरा रही है,जो आज भी बदस्तूर जारी है। हम बात कर रहे हैं नरैना माहेश्वरी समाज की, समाज बंधुओ ने समाज अध्यक्ष रामरतन मालू की अगुवाई में संत श्री दादू दयाल महाराज के मुक्ति धाम भैराणाजी में श्री दादू पीठाधीश्वर ओमप्रकाश दास महाराज के चातुर्मास कार्यक्रम में मांडल के बिड़ला परिवार द्वारा आयोजित प्रसादी कार्यक्रम में शामिल होकर दादू पीठाधीश्वर ओमप्रकाश दास महाराज का माला पहनाकर भक्ति भाव से अभिनंदन करने के बाद बिड़ला परिवार के श्रीलाल, रमेशचंद, सुशील, संजय, राधा, रक्षा बिड़ला, अमरेश, गोपाल काबरा, जगदीश नराणीवाल सहित अन्य परिवारजनों का शॉल ओढ़ाकर व माला पहनाकर आत्मीयता के स्नेह भाव से अभिनंदन किया। वहीं बिड़ला परिवार ने दादू पीठाधीश्वर ओमप्रकाश दास महाराज का गुलाब की माला पहनाकर भव्य स्वागत कर नरैना माहेश्वरी समाज के बंधुओ का पीतांबर दुपट्टा ओढ़ाकर स्नेह भाव से अभिनंदन किया। इस दौरान समाज बंधुओ ने प्रकृति की गोद में हरियाली वातावरण से आच्छादित भैराणा धाम में स्थित दादू मंदिर में शीश झुकाकर दादू वाणी जी के दर्शन कर प्राकृतिक वातावरण का आनंद लेते हुए दादू पीठाधीश्वर ओमप्रकाश दास महाराज के प्रसादी ग्रहण करने के बाद पंगत प्रसादी लेकर अपने स्मृति पटल में भैराणाजी धाम की अमिट भक्तिमय यादें लेकर अपने गृहनगर नरैना प्रस्थान कर गये।

जन्मजात टेड़े पैरों की विकृति क्लबफुट को बिना ऑपरेशन सही करने की तकनीक पॉन्सटी की वर्कशॉप का आयोजन

जयपुर टाईम्स

जयपुर(कासं.)। एस एम एस चिकित्सालय के अस्थि रोग विभाग के विभागाध्यक्ष वरिष्ठ आचार्य डॉ आर पी आसट ने बताया कि एस एम एस हॉस्पिटल के अस्थि रोग विभाग एवं स्वयं सेवी संस्था "क्योर इंडिया " के संयुक्त तत्वावधान में जन्मजात टेडे पावों की विकृति को बिना ऑपरेशन के ही पॉन्सटी टेक्नीक से प्लास्टर लगा कर उपचार की विधि पर कार्यशाला जयपुर मेडिकल एसोसिएशन के सभागार में आयोजित की गई । गर्भावस्था में शिशु की असामान्य स्थिति के कारण , सेरिब्रल पाल्सी, पोलियो के कारण जब बच्चों के पैर टेडे हो जाते हैं तो उन्हें पॉन्सटी तकनीक से प्लास्टर लगा कर बिना चीरा फाड़ी के ठीक किया जा सकता है । एस एम एस हॉस्पिटल के अस्थि रोग विभाग में टेडे पाँव या क्लब फुट के रोगी सम्पूर्ण राष्ट्र में सर्वाधिक संख्या में आते हैं । नेशनल हेल्थ मिशन एवं क्योर इंडिया के संयुक्त तत्वाधान में क्लब फुट फ्री राजस्थान के अंतर्गत जयपुर में क्लब फुट रोगियो की पंजीकृत संख्या 4060 है जो पूरे भारत में पंजीकृत 18000 में से सर्वाधिक है । इस प्रशिक्षण कार्य शाला में यह प्रशिक्षण क्योर इंडिया के मेडिकल डायरेक्टर डॉ मैथ्यू वर्गीस, डॉ संतोष , डॉ कुमार शशिकांत एवं विभागाध्यक्ष डॉ आर पी आसट ने ऑर्थोपेडिक्स में पी जी कर रहे विद्यार्थियों को दिया । कार्य शाला में भाग लेने वाले अन्य चिकित्सकों में वरिष्ठ आचार्य डॉ पंकज जैन, वरिष्ठ आचार्य डॉ अनुराग धाकड़, वरिष्ठ आचार्य डॉ देवकांत मीणा प्रमुख हैं । क्योर इंडिया की टेक्निकल सपोर्ट टीम में अल्फ्रेड जैकब , रंजना ,पिंकी , कोमल एवं प्रियंका के नाम मुख्य हैं ।

पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का लिया संकल्प

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) सांगानेर मालपुरा गेट स्थित एक पेड़ मां के नाम तथा हरियालो राजस्थान अभियान के तहत को पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के आह्वान एवं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा जी की प्रेरणा से "एक पेड़ मां के नाम" तथा "हरियालो राजस्थान" अभियान के तहत सांगानेर स्थित बालिका विद्यालय एवं शहीद पुनीत नाथ राज. उच्च प्राथमिक विद्यालय में वृक्षारोपण कर प्रकृति संरक्षण का संदेश दिया। भगवाधारी सांगानेर 89 पार्षद गिर्राज शर्मा ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधरोपण अति आवश्यक है। मानव जीवन पूर्ण रूप से स्वस्थ तभी होगा जब कदम-कदम पर पौधे लगेंगे। पौधरोपण जीवन के लिए बेहद जरूरी है। आक्सीजन देने वाले पौधों की महत्ता को दरकिनार नहीं किया जा सकता।वन हमारी धरती के फेफड़े हैं। पेड़ हानिकारक गैसों को अवशोषित करते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं। अधिक वृक्षारोपण से ऑक्सीजन के स्तर को बढ़ाने में मदद मिल सकती है इस अवसर पर विद्यालय परिसर में, आम, अमरूद, अनार , चीकु, बिल्वपत्र आदि के 50 पौधे लगाकर छात्र-छात्राओं को पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलायी7 इस मौके पर भगवान सहाय शर्मा,उषा शर्मा, दयानंद शर्मा,अरूण शर्मा,सुनिल गुप्ता, विमलेश शर्मा आदि विद्यालय के स्टाफ मौजूद रहे।

विभाग और ठेकेदार की लापरवाही का खामियाजा जनता भुगतने को मजबूर

रोड पर खतरनाक मोड़ दौड़ती मौत,संकेतक बोर्ड का अभाव,बना रहता दुर्घटना का अंदेशा

पोयना से बामनेरा नदी में एल आकार का मोड़ बड़े हादसे का इंतजार

जयपुर टाइम्स

सुमेरपुर(निसं.)। निकटवर्ती गांव पोयना के मुख्य सड़क पर सार्वजनिक विभाग और ठेकेदार की बड़ी लापरवाही सामने आई है। गांव से बामनेरा जाने वाले मुख्य सड़क पर एक एल मोड देने से दुर्घटनाओं का अंदेशा बना हुआ है। गांव के पास स्थित नदी के अंदर आज से पूर्व करीबन 3 साल पहले सीसी रोड बनाया गया है, जहां ठेकेदार और विभाग की अनदेखी के कारण वहां गोलाई की जगह एल मोड़ दिया गया है,जिससे हमेशा खतरा बना हुआ है। इस मुख्य मार्ग से रोजाना हजारों लोगों का आवागमन होता है और बड़ी संख्या में वाहन एक दूसरे गांव में जाने के लिए सरपट दौड़ते हैं। पोयना नदी में यह बहुत खतरनाक मोड़ है,जहां लोगों की सड़क पर मौत दौड़ती हैं। इस मोड़ से परेशानी नहीं परंतु कभी भी बड़ा हादसा भी हो सकता है। ग्रामीणों का कहना है कि विभाग और ठेकेदार की अनदेखी का खामियाजा लोग भुगतने को मजबूर हैं। इस रास्ते से स्कूली बस के साथ अन्य वाहनों की आवाजाही होती हैंकभी भी बड़ा हादसा हो सकता है। राज्य सरकार से लेकर जनप्रतिनिधि पूरी तरह से अलर्ट मोड पर हैं,लेकिन विभाग कहीं ना कहीं लापरवाही पीछे छोड़ देते हैं जिसका खामियाजा जनता भुगत रही है। विभाग की गलती लोगों को डर सता रही हैं। आपको बता दें कि गांव पोयना नदी के अंदर पूर्व में सीसी सड़क बनाई गई थी जहां एल आकार का मोड़ दिया गया है यह मोड हादसे की आशंका जताई जा रही है। वही इन स्थानों पर संकेतक व सूचनात्मक बोर्ड नहीं होने के चलते दुर्घटना होने का अंदेशा बना रहता है। डामरीकरण सड़क के साथ सीसी बना दिया लेकिन बोर्ड लगाना जिम्मेदार भूल गए। संबंधित अधिकारी दुर्घटनाएं रोकने के लिए किसी भी तरह के प्रयास नहीं कर रहे है। बता दे की जिन स्थानों पर संकेतक बोर्ड नहीं लगे है। जबकि रोजाना इस मार्ग से सैकड़ो गांवो के लोग टू व्हीलर,थ्री व्हीलर, फोर व्हीलर से यात्रा करते हैं,और बड़े-छोटे वाहनों का संचालन किया जाता है। फिर भी विभाग कुंभकरण की नींद में सोया हुआ है।

नोटिस वास्ते जाहिर करने की वजह

बअदालत - न्यायालय पारिवारिक न्यायालय सं. 1 बीकानेर

कंचन	बनाम	सुशील
मुकदमा नम्बर	सन 25-7-2025	

बनाम

सुशील पुत्र श्री बाबुलाल निवासी एस. बी. ज्वैलर्स, अगुणा बाजार, सुजानगढ़ जिला चुरू।

लिहाजा आपको इतिला दी जाती है कि तारीख 17.7.2025 बरोज बृहस्पती वार 10.00 बजे दिन को अदालता हाजा में असलतन या वकालतन हाजिर होकर दरख्वास्त के खिलाफ वहज हाजिर करो वर्ना दरख्वास्त मजकूरा इकतरफा सुनी व फैसला की जाऐगी।

वशिरब्त मेरे दस्तखत व मुहर के आज तारीख 7-7-2025 को जारी किया गया।

द, वकील / फरीक

वरिष्ठ मुन्सरिम
पारिवारिक न्यायालय सं. 1
बीकानेर (राज.)

रींगस से अमरनाथ यात्रा का शुभारंभ

16 जुलाई को बाबा बर्फानी के दर पर नवाएंगे शीश

जयपुर टाइम्स

रींगस(निस)। कस्बे के भैरु बाबा मंदिर से अमरनाथ यात्रा के लिए 30 यात्रियों का दल रवाना हुआ। खंडेला विधायक सुभाष मील ने यात्रा संयोजक अमित शर्मा और घासीराम कुमावत को माला पहनाकर अमरनाथ यात्रा के लिए रवाना किया। इससे पहले सभी यात्रियों ने मठ महादेव मंदिर में भोलेनाथ की पूजा-अर्चना की। जहां पर संत दत्तपुरी महाराज ने यात्रा सफल होने का आशीर्वाद प्रदान किया। यात्रा संयोजक पालिका उपाध्यक्ष अमित शर्मा ने बताया कि अमरनाथ यात्रियों का 30 सदस्यीय दल 10 दिन की यात्रा करके 21 जुलाई को वापस रींगस लौटेगा। सभी यात्री 16 जुलाई को बाबा बर्फानी के दर पर शीश नवाकर क्षेत्र की खुशहाली की कामना करेंगे। इस दौरान शिक्षाविद प्रदीप शर्मा, रामगोपाल बींवाल, मामराज गुर्जर, सुरेश कुमावत, पंकज गर्ग, राकेश कोरखन्या, मोनू शर्मा, अशोक वर्मा, पवन शर्मा, विकास शर्मा, हंसराज कुमावत, नरेंद्र डाकवाला, महिपाल सिंह, प्रदीप कुमावत, गौतम पारमुवाल आदि मौजूद रहे।

दांता में निरंकारी सत्संग व लंगर प्रसादी

जयपुर टाइम्स

दांतारामगढ़(निस)। दांता के ज्ञानदासपुरा रावोरिया की ढाणी में स्थित संत निरंकारी सत्संग भवन पर रविवार को गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में निरंकारी सत्संग का आयोजन हुआ। सत्संग में आस पास के क्षेत्र के सैकड़ो श्रद्धालुओं महात्माओं ने भाग लिया और पुण्य लाभ कमाया। सत्संग में दांता ब्रांच के संयोजक महात्मा भंवरलाल कुमावत ने आए हुए सभी श्रद्धालुओं महात्माओं को सत्संग की महिमा के बारे में जानकारी दी और सत्संग में ईश्वर की भक्ति करते हुए गुरु के बताए मार्ग पर चलने की प्रार्थना की गई। संयोजक भंवरलाल कुमावत ने कहा कि भगवान भक्तों के साथ रहते हैं और भक्ति सदा के लिए रहती है। भक्ति हमेशा हमेशा के लिए रहती है। उन्होंने बताया कि यहां हर रविवार को सत्संग आयोजित किया जाता है। सत्संग के पश्चात नाम दान और विशाल सामूहिक लंगर (भंडारे) का आयोजन हुआ। लंगर के पश्चात निरंकारी सत्संग भवन परिसर में संयोजक और महात्माओं ने पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण और सार संभाल का संकल्प भी लिया। इस दौरान दांता संयोजक भंवरलाल कुमावत, सुरेश कुमार, ज्ञानाराम सैनी, बाबूलाल सैनी, भंवरलाल, भोलुराम, गोपाल लाल, नेमाराम, जवाहरलाल आदि मौजूद रहे।

पीएम श्री दांता विद्यालय में कक्षा-कक्ष का वर्चुअल शिलान्यास

जयपुर टाइम्स

दांतारामगढ़(निस)। पीएमश्री राउमावि दांता में 12.5 लाख रुपए की लागत से बनने वाले कक्षा कक्ष का शिलान्यास हुआ। विद्यालय के प्रधानाचार्य सुरेश कुमार ने बताया कि भामाशाह मुरारीलाल पोद्दार ने अपनी शादी की 50 वीं वर्षगांठ के अवसर पर विद्यालय में 12.5 लाख रुपए की लागत से बनने वाले कक्षा-कक्ष का वर्चुअल शिलान्यास किया। इस अवसर पर भंवरलाल चेजारा, पूर्व सरपंच हरकचंद झाझरी श्रीराम दास स्वामी, मनोहर लाल चेजारा, भामाशाह प्रेरक घीसालाल छीपा, बनवारी पारीक, रामावतार दीक्षित, सीता नायक आदि मौजूद रहे। सभी आए हुए जनप्रतिनिधियों का प्रधानाचार्य व विद्यालय स्टाप की तरफ से अभिनन्दन किया। इस अवसर पर मिठाई वितरण भी की गई।

रींगस में विशाल स्वैच्छिक रक्तदान शिविर कल

रींगस(निस)।। समाजसेवी रीता चंद्र सक्सेना की पुण्य स्मृति में 15 जुलाई को सीसीए शिक्षण समूह और रोटरी क्लब रींगस के संयुक्त तत्वावधान में विशाल स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। रोटरी क्लब के सह प्रांतपाल डॉ भंवर सिंह ताखर ने बताया कि स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन कस्बे के भातरों के मोहल्ले में स्थित सीसीए शिक्षण संस्थान में प्रातः 8 बजे से शाम 4 बजे तक किया जाएगा। क्लब के पूर्व सह प्रांतपाल व सीसीए शिक्षण समूह के निदेशक डॉ अजय सक्सेना ने बताया कि शिविर में सर्वसमाज की सहभागिता रहती है इसी के साथ स्वस्थ व्यक्ति की ओर से समय-समय पर रक्तदान करने से कई गंभीर बिमारियों का खतरा टल जाता है।

अजीतगढ में सड़कों पर गहरे खड्डे बने आफत, वाहन चालक परेशान, विभाग बन रहा अनजान

जयपुर टाइम्स

अजीतगढ़(निस)। कस्बे के सबसे व्यस्ततम अजीतगढ़ नीमकाथाना सड़क मार्ग पर थाने के पास एक गहरा गड्ढा बन गया है जो वाहन चालकों और आमजन के लिए परेशानी का सबब बन गया है। बरसात के पानी के कटाव के कारण सड़क मार्ग की साइड में काफी दूरी तक गहरा चौड़ा खड्डा है, इससे कभी भी कोई बड़ी दुर्घटना हो सकती है लेकिन सार्वजनिक निर्माण विभाग इस तरफ कोई ध्यान नहीं दे रहा है। लोगों में रोष व्याप्त है। ग्रामीण गोपाल बादशाह, ताराचंद यादव, मुकेश कुमार फौजी, बंटी कुमावत, बाबूलाल स्वामी समेत कई लोगों ने बताया कि इस सड़क मार्ग पर बरसात के पानी की उचित निकासी की व्यवस्था नहीं होने के कारण व सड़क मार्ग पर ढलान होने के कारण बरसात का पानी बहकर सड़क मार्ग की साइड होता हुआ आगे जाता है जिस कारण पिछले कई दिनों से इस मार्ग पर थाने के पास काफी दूरी तक गहरा एवं चौड़ा खड्डा पड़ा हुआ है जबकि इस सड़क मार्ग पर हजारों की संख्या में 24 घंटे छोटे व बड़े वाहनों का आवागमन रहता है। इसी तरह अजीतगढ़ से शाहपुरा सड़क मार्ग पर मदुस्या मोड़ के पास सड़क के दोनों साइड में गहरा व चौड़ा गड्ढा हुआ है। साथ ही अजीतगढ़ बस स्टैंड के पेट्रोल पंप के सामने से लेकर बाहराधडी सीसी सड़क मार्ग जगह-जगह से क्षतिग्रस्त हो गया है। इस संबंध में वार्ड नंबर एक के वार्ड पार्षद मनीष मीणा ने कहा कि वास्तव में सड़क मार्ग की साइड में बरसात के पानी के कटाव के कारण गहरा व चौड़ा गड्ढा काफी दूरी तक पडा हुआ है तो दूसरी तरफ अजीतगढ़ बस स्टैंड पर पेट्रोल पंप के सामने से लेकर मदुस्या मोड तक सड़क मार्ग की हालत खराब हो रही है जिस कारण इनकी मरम्मत के लिए जल्दी ही सार्वजनिक निर्माण विभाग व आरएसआरडीजी को अवगत कराया जाएगा।

बम-बम भोले की गूंज के साथ शिव भक्तों का किया स्वागत

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। राष्ट्रीय जाट महासभा के प्रदेशाध्यक्ष धर्मेंद्र कीलक के नेतृत्व में छापर बस स्टेंड पर कांवड़ियों का भव्य स्वागत पुष्पवर्षा कर व हार पहनाकर किया गया। श्री बाल गणेश सेवा समिति के तत्वावधान में ताल छापर से श्रीडूंगर बालाजी गोपालपुरा के लिए कावड़िये कावड़ लेकर रवाना हुए, जिनका बस स्टेंड पर पुष्प वर्षा और हार पहना कर भव्य स्वागत किया गया। कावड़ यात्रा में लगभग एक सौ से अधिक महिला, पुरूष और बच्चे शामिल हैं। हर हर भोले, बम बम भोले शंकर भगवान की जय आदि जय-जयकार से वातावरण गूंजायमान हो गया। इस अवसर पर नेचर एनवायरमेंट एण्ड वाइल्डलाइफ सोसायटी के अध्यक्ष कन्हैयालाल स्वामी, वरिष्ठ चिकित्सक डॉ सुनील मीणा, रेखाराम गोदारा, साहित्यकार डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा, समाजसेवी प्रदीप सुराणा, ज्ञानोद्यान महिला महाविद्यालय छापर की निदेशिका कविता शर्मा, डॉ गिरधारी रतावा, नवीन डूडी, राजकुमार प्रजापत, पार्षद सत्यनारायण स्वामी, नानूराम कुल्हरि, छापर जाट समाज के अध्यक्ष भीखाराम डूडी, सीताराम स्वामी, संतोष भंसाली, हेमा दुधोड़िया, विजेंद्र सुराणा, पूसराज सोनी आदि उपस्थित रहे। कावड़ में कांवड़िए भगवान शंकर और अन्य पात्रों के स्वांग बनाए हुए थे। कावड़ की भव्य व्यवस्था बंटी राकावत, भागीरथ कुलहरि, रणजीत दर्जी, गोपाल शर्मा, नीरज सोनी, प्रमिला दर्जी, भवानी नाई, लक्ष्मी स्वामी, संतोष शर्मा आदि ने संभाली। इसी प्रकार हरिद्वार से सुजानगढ कावङयात्रा के दौरान कावड़िये विकास कुमार प्रजापत, विक्रम प्रजापत, अरविंद प्रजापत एंव सुरेंद्र सिरस्वा से मुजफ्फरनगर के आईपीएस साहब सत्य नारायण प्रजापत ने यात्रियों से उनके स्वास्थ्य व यात्रा के दौरान सुरक्षा व्यवस्था का फीड-बैक लिया। जिससे कावङयात्रियों ने उनके इस अटूट प्रेम व उत्तम व्यवहार के लिए उनका धन्यवाद किया। बता दें कि सत्यनारायण प्रजापत सुजानगढ़ के ही मूल निवासी हैं।

महिला का अपहरण कर मारपीट व लूटपाट मामले में दो महिला आरोपी गिरफ्तार, जेल भेजा

जयपुर टाइम्स

अजीतगढ़(निस)। स्थानीय पुलिस ने रविवार देर शाम महिला का अपहरण कर जान से मारने की नीयत से मारपीट कर जंगल में पटक कर फरार होने वाली दो महिला आरोपियो को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। इस मामले में एक आरोपी को शनिवार शाम गिरफ्तार किया गया था। तीनों आरोपियों को सीकर अवकाश कालीन न्यायाधीश के समक्ष पेश किया गया जहां से महिला आरोपियों को सीकर जेल व आरोपी शैतान को नीमकाथाना जेल भेज दिया गया। अजीतगढ़ थाने के कार्यवाहक थाना अधिकारी रघुवीर प्रसाद ने बताया कि 10 जुलाई को परिवादिया ने अजीतगढ़ थाने में रिपोर्ट दर्ज करा आरोप लगाया था कि 25 जून को मेरे को अजीतगढ़ से नानूराम, शैतान सिंह, सुन्ड़ी देवी, राजू व दो अन्य व्यक्ति मेरे को एक सफेद रंग की गाड़ी में डालकर ले गए व पगत्लया की ढाणी के पास मेरे साथ गंभीर मारपीट कर मुझे वही जंगल में पटक गए। रिपोर्ट में आरोप लगाया था कि मैं गंभीर रूप से घायल हो गई, जिसका फायदा उठा आरोपी दो सोने के जोल्या, आधा किलो चांदी व नाक में पहन रखी सोने की बाली को ले गए। साथ ही मेरा आधार कार्ड, पैन कार्ड, जन आधार कार्ड व मेरी पासपोर्ट फोटो भी लेकर चले गए। रिपोर्ट में आरोप लगाया था कि मुझे दूसरे दिन होश आने पर मैं चुड़ला गांव के पास रास्ते पर आई। मुझे इलाज के लिए अजीतगढ़ पुलिस अजीतगढ़ अस्पताल लेकर आई। पुलिस ने रिपोर्ट के आधार पर मुकदमा दर्ज कर आरोपियों की तलाश के लिए अजीतगढ़ पुलिस उपअधीक्षक उमेश गुप्ता के निर्देशन में कार्यवाहक थाना अधिकारी रघुवीर प्रसाद, कांस्टेबल राकेश कुमार, दीपक, मनोज, रवि, अनिकेत, पुलिस वाहन का कांस्टेबल सुरेश व महिला कांस्टेबल सुरज्ञान व सुमन की पुलिस टीम ने जगह- जगह आरोपी के ठिकानो पर दबिश दी और सूचना के आधार पर दो महिला आरोपियों को गिरफ्तार किया गया।

सूचना व जनसंपर्क कार्यालय की पुरानी बिल्डिंग के अधिग्रहण का मामला

कलेक्टर के अंतिम आदेश का इंतजार

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। जिला मुख्यालय पर स्थित सूचना व जनसंपर्क कार्यालय की पुरानी बिल्डिंग के अधिग्रहण को लेकर अभी तक स्थिती असमंजस की बनी हुई है। जबकि मामले की भनक लगते ही जनप्रतिनिधियों सहित जिले भर के विभिन्न संगठन व संस्थाओं की ओर से पत्रकारों को अपार जनसमर्थन दिया जा रहा है। मामले में पत्रकारों को अभी जिला कलेक्टर के अंतिम निर्णय का इंतजार है। मीडिया की ओर से मामले की विस्तृत जानकारी प्रभारी मंत्री, सांसद, पूर्व मंत्री, विधायक, पूर्व विधायक, पार्टियों के अध्यक्ष, जिलाध्यक्ष सहित तकरीबन सभी जनप्रतिनिधियों को पहले ही दी जा चुकी है जिसमे सभी ने अधिग्रहण के मामले को गलत बताते हुए हस्तक्षेप करने का आश्वासन दिया है। पत्रकारों की ओर से मामले को लेकर मुख्यमंत्री व मुख्य सचिव से भी मिलने का समय मांगा गया है। ताकि पत्रकार अपना जायज पक्ष रखते हुए मुख्यमंत्री से बिल्डिंग को अधिग्रहण नहीं करने की मांग करेंगे। विदित है कि उक्त बिल्डिंग में वर्षों से पत्रकारों के बैठने का स्थान व न्यूज बनाने के साथ साथ आमजन के लिए वाचनालय भी यहां संचालित होता आया है। इसके बावजूद एसीबी न्यायालय खोलने के लिए जिला कलेक्टर अन्य जगहों की बजाय सूचना केन्द्र की पुरानी विल्डिंग को ही देने (अधिग्रहण) पर आमादा है। जो न्यायसंगत नही है। अधिग्रहण को लेकर जिलेभर से मिल रहे जनसमर्थन में एसएफआई, एनएसयूआई, आदर्श जाट महासभा, मेघवाल समाज मोर्चा राजस्थान, झुंझुनूं युवा राजपूत महासभा, आदिवासी मीन सेना, देवसेना संगठन, इत्तेहादूल मुस्लिमीन सोसायटी झुंझुनूं, राजस्थान निजी चिकित्सालय संगठन (उपचार) डॉ कमलचंद सैनी, कामधेनू निराश्रित गौ-सेवा समिति मंडावा, राष्ट्रीय गौ रक्षक सेना राजस्थान, फोटोग्राफर समिति झुंझुनू, विप्र फाउंडेशन झुंझुनूं कमलकांत शर्मा, मानवाधिकार सामाजिक न्याय आयोग शंकरलाल शर्मा, लोकसेवा ज्ञान मंदिर ट्रस्ट, राष्ट्रीय जाट महासंघ विरेन्द्र क्यामसरिया, अग्रवाल समाज सेवा समिति झुंझुनूं, राजस्थान आदर्श जाट महासभा शिवकरण जानूं, स्वर्णकार समाज झुंझुनूं, गौ-सेवा संवर्धन संस्थान, शेखावाटी वैष्णव समाज, जन समस्या निराकरण मंच इस्लामपुर, राजस्थान राज्य वाहन चालक व तकनीकी संघ, सैनी युवा महासंघ झुंझुनूं आदि के अलावा जनप्रतिनिधियों में सांसद विजेन्द्र ओला, बबलू चौधरी, पूर्व विधायक शुभकरण चौधरी, पूर्व मंत्री राजेन्द्र गुढ़ा, विधायक रीटा चौधरी, विधायक पितराम सिंह काला, मंडावा चेयरमैन नरेश सोनी, पूर्व मंडल अध्यक्ष मंडावा विजेन्द्र सैनी और कांग्रेस के युवा नेता संदीप सैनी उदयपुरवाटी सहित काफी जनप्रतिनिधियों, संस्थानों और संगठन ने अपना समर्थन दिया है।

होटल में रुके युवक ने फंदा लगाकर की आत्महत्या

जयपुर टाइम्स

रींगस(निस)। कस्बे के मिल तिराहे स्थित श्रीराम होटल में ठहरे युवक ने फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली, रात्रि करीब 1 बजे पुलिस को सूचना मिलने पर युवक के शव को उतार कर राजकीय उप जिला अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया जिसका परिजनों के आने के बाद पोस्टमार्टम करवाया गया। हेड कांस्टेबल अमर सिंह ने बताया कि भिवानी जिले के बिधवान गांव निवासी 24 वर्षीय सुरेन्द्र पुत्र धर्मपाल कुमावत ने शनिवार को दोपहर करीब 4 बजे श्रीराम होटल में कमरा किराए पर लिया था, जिसने देर रात होटल के कमरे में ही फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतक युवक पुणे महाराष्ट्र में मजदूरी करके गांव लौट रहा था। मृतक अविवाहित था। मृतक के पिता धर्मपाल की ओर से मर्ग रिपोर्ट दर्ज करवाई गई है।

दामोदरी तलाई में बरगद व पीपल का पेड़ लगाया

जयपुर टाइम्स

जीणमाता(निस)। बासड़ी विकास सेवा समिति बासड़ी कला रलावता के तत्वाधान में दामोदरी तलाई मे बरगद व पीपल के पेड़ लगाकर मेरे गाँव मेरी जिम्मेदार अभियान के तहत पौधरोपण किया गया। समिति पदाधिकारियों को पेड़ो की देखकर की व्यक्तिगत जिम्मेदारी दी गई। कार्यक्रम में संस्था के अध्यक्ष प्रहलाद निठारवाल, सचिव सीताराम फौजी, कोषाध्यक्ष भगवानराम, सास्कृतिक सचिव नरेन्द वर्मा, प्रहलाद वर्मा सरंक्षक रामेश्वर लाल सहित नागरिक उपस्थिति रहे। बासड़ी विकास सेवा समिति सामाजिक, पर्यावरण, प्रतिभा सम्मान समारोह, गौसेवा, सासकृतिक, खेल, शिक्षा सहित विभिन्न कार्यक्रमो का आयोजन करवाती है।

विधायक सुभाष मील ने भैरुजी जोहड़ी सौन्दर्यकरण का लिया जायजा

जयपुर टाइम्स

रींगस(निस)। देशभर में प्रसिद्ध भैरु बाबा की पवित्र जोहड़ी के जीर्णोद्धार व सौंदर्यकरण का विधायक सुभाष मील ने जायजा लिया और कार्यकारी एजेंसी के ठेकेदार से सौंदर्यकरण कार्यों की जानकारी ली। भैरुजी मंदिर कमेटी महासचिव गोपाल सिंह गुर्जर ने बताया कि पिछले 40 सालों से चल रही भैरुजी जोहड़ी सौन्दर्यकरण की मांग को विधायक सुभाष मील ने पूरा किया। कमेटी पदाधिकारी मामराज गुर्जर ने बताया कि आगामी दिनों में भैरु बाबा मंदिर पर्यटन स्थल के रुप में विकसित होगा। कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष विनोद गुर्जर ने बताया कि विधायक सुभाष मील ने कार्यकारी एजेंसी के ठेकेदार सुभाष ढाका से जोहड़ी सौन्दर्य करण के अंतर्गत बनने वाले घाट, चारदीवारी, पौधरोपण आदि की जानकारी ली और गुणवत्ता पूर्ण कार्य करने के लिए निर्देशित किया। इससे पहले विधायक सुभाष मील ने भैरु बाबा की पूजा-अर्चना कर क्षेत्र में खुशहाली की कामना की। इस दौरान फूलचंद गुर्जर, गिरधारी लाल गुर्जर, मोहनलाल, महावीर प्रसाद आदि मौजूद रहे।

विकास प्रेस क्लब के अध्यक्ष, मुकेश सचिव बने

जयपुर टाइम्स

उदयपुरवाटी(निस)। कस्बे के बालाजी होटल में उदयपुरवाटी प्रेस क्लब की साधारण बैठक हुई। गंगाधर डिग्रवाल के निर्देशन में प्रेस क्लब के वार्षिक चुनाव हुए। चुनाव में विकास कनवा को प्रेस क्लब का सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। मुकेश वर्मा को सचिव, सुमेर राव को उपाध्यक्ष, जितेंद्र बंशीवाला को मीडिया प्रभारी चुना गया। भोलाराम गुर्जर को कोषाध्यक्ष बनाया गया। इस दौरान संरक्षक सुशील दाधीच, सज्जन उर्मिल, कैलाश सैनी, विकास योगी, संजय रेपस्वाल, स्वप्निल सक्सेना आदि मौजूद रहे।

डीडवानिया खाण्डल विप्र युवा मंडल के अध्यक्ष मनोनीत

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। खाण्डल विप्र युवा मंडल के दिपक डिडवानिया को पुनः सर्वसम्मति से खाण्डल विप्र सेवा संस्थान के अध्यक्ष बद्रीप्रसाद बंशीया ने मनोनीत कर कार्यकारिणी शिघ्र बनाने के निर्देश देते हुए कहा कि युवा मंडल के शसक्त बनने से समाज ओर अधिक संगठित होगा। डिडवानिया के अध्यक्ष बनने पर मनीष रिणवा, एडवोकेट विनोद नोहाल, मुरलीधर मंडगीरा, मनोज जोशी, ओमप्रकाश मंगलहारा, पवन माटोलिया, पूर्व पालिकाध्यक्ष लिट्टू कल्पनाकांत, विकास रिणवा, श्याम सुंदर चोटिया, चांद रिणवा, विजय कुमार चोटिया, बाबुलाल बील, हरिशंकर मंगलहारा, रामकिशन नोहाल, बुद्धमल माटोलिया, मुकेश रिणवा, रामावतार नोहाल, सुरेन्द्र नोहाल सहित कई विप्रजनों ने बधाई देते हुए संस्थान के संरक्षक पूर्व मंत्री राजकुमार रिणवा, रघुनाथ प्रसाद जोशी, सत्यनारायण सेवदा सहित सभी पदाधिकारियों का आभार व्यक्त किया।

भाई बहन ने सांस्कृतिक प्रभारी का सेवानिवृत्ति कार्यक्रम में किया सम्मान

जयपुर टाइम्स

दांतारामगढ़(निस)। नेशनल फोल्क डांस चैंपियन भाई बहन की जोड़ी श्रीराम कुमावत और वन्दना कुमावत ने अपने सांस्कृतिक प्रभारी पूरणमल जोरम (व्याख्याता) का सेवानिवृत्ति कार्यक्रम में राजस्थानी पगड़ी और पेड़ देकर सम्मान किया। जोरम के सानिध्य में टीम भाई बहन ने अनेक बार राज्य स्तर पर अपनी लुप्त होती राजस्थानी कला और संस्कृति को प्रदर्शित किया। भाई बहन 2015 से पौधरोपण को बढ़ावा देने के लिए जन्मदिवस जैसे शुभ अवसर उपहार स्वरूप पेड़ देते है और साथ ही लुप्त होती राजस्थानी कला और संस्कृति को बचाने के लिए प्रयासरत है। व्याख्याता पूरणमल जोरम ने 33 वर्ष 3 माह 11 दिन के कार्यकाल में अनेकों बार संगीत और कला के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दिया। हाल ही में राजस्थान युवा महोत्सव 2025 में टीम ने जोरम के निर्देशन में राज्य स्तर पर परचम लहराया।

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, सोमवार
14 जुलाई, 2025

पौधारोपण कर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तहसील के गांव देगा में युवा नेता समुद्र नायक के नेतृत्व में युवा टीम की ओर से पर्यावरण संरक्षण को लेकर अच्छा संदेश देते हुए 500 पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण को मजबूत करने का संकल्प लेते हुए पौधारोपण किया गया। युवा नेता समुद्र नायक ने बताया कि बरसात के मौसम में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण को मजबूत करने व सरकार की ओर से पर्यावरण संरक्षण को लेकर जो अभियान चलाया जा रहा है उसको लेकर गांव की युवा टीम के सहयोग से 500 पौधे लगाकर पौधों की सार संभाल का संकल्प लिया गया है। इस अवसर पर गांव के सज्जन सुथार, पप्पू सिंह, जगनाराम नायक, ओमप्रकाश मेघवाल, पूर्णाराम सुथार, मदनलाल नायक, भादरदान चारण सहित गांव के अनेक लोगों ने इस अभियान में सहयोग कर ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाने का संकल्प लिया है।

बिजली का पोल टूटा, दो दिन से 30 घर अंधेरे में डूबे

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के वार्ड 27 में स्थित उमरा मस्जिद के पास शनिवार को पिकअप चालक ने दो बिजली के पोलों को टक्कर मार दी। हादसे में वार्ड के प्रेम प्रकाश और सुगरा बानो के घरों के आगे के बिजली के पोल पूरी तरह टूट गए। इसके चलते पिछले दो दिनों से करीब 30 घरों की बिजली सप्लाई ठप पड़ी है। वार्ड वासियों ने बताया कि कई बार बिजली विभाग के जिम्मेदार अधिकारियों को फोन कर समस्या से अवगत करवाया गया। लेकिन कोई स्थाई समाधान नहीं हुआ है। इसी को लेकर रविवार को वार्ड के लोगों ने बिजली विभाग के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। वार्ड के सोनू रेगर ने चेतावनी दी कि अगर सोमवार तक समस्या का समाधान नहीं हुआ तो वार्डवासी एकजुट होकर बिजली विभाग कार्यालय का घेराव करेंगे।जिसकी जिम्मेदारी प्रशासन की होगी। उन्होंने बताया कि अधिकारी हर बार आश्वासन देते हैं कि जल्द समाधान होगा। लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। जिससे लोगों को विरोध प्रदर्शन करने पर मजबूर होना पड़ा है। इस मौके पर सोनू रेगर, द्रोपती, मंजू, भंवरी समेत बड़ी संख्या में वार्डवासी उपस्थित रहे।

चाड़वास मंडल भाजपा की कार्यकारिणी घोषित

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। चाड़वास भाजपा मंडल के अध्यक्ष करणीसिंह राठौड़ ने जिलाध्यक्ष बसंत शर्मा, प्रदेशाध्यक्ष मदनसिंह राठौड़ की अनुमति और पूर्व विधायक अभिनेष महर्षि की अभिशंषा पर अपनी कार्यकारिणी की घोषणा कर दी है। जिसमें उपाध्यक्ष पद पर नानूदेवी नायक, सुप्यार कंवर, किशन भाटी, नंदनाथ सिद्ध, इन्द्रसिंह राठौड़, सुरजाराम गुलेरिया को बनाया गया है। इसी प्रकार हंसराज नायक भोजलाई, दिनेश रतावा को मंडल महामंत्री बनाया गया है। मंडल मंत्री पद पर कान्ता स्वामी, दिनेश कालेर, भागीरथ नाथ सिद्ध, शान्ति देवी प्रजापत, रूकम कंवर, दयाल मेघवाल को नियुक्ति दी गई है। कोषाध्यक्ष गोपालसिंह शेखावत, कार्यालय प्रभारी मोहन सियोदिया, मीडिया प्रभारी बबलूसिंह, सह प्रभारी प्रकाश कंवर, शोसल मीडिया प्रभारी विकास बीरड़ा, सह प्रभारी हुकमाराम भार्गव, आईटी संयोजक बजरंगलाल सुथार, आईटी सह संयोजक बजरंगलाल मेघवाल को बनाया गया है। इसी प्रकार 40 सदस्यों को भी कार्यकारिणी में शामिल किया गया है।

कांग्रेस संगठन की बैठक आयोजित, मजबूती पर दिया बल

जयपुर टाइम्स

उदयपुरवाटी(निस)। कस्बे के गणपति मैरिज गार्डन में कांग्रेस संगठन की बैठक आयोजित हुई। बैठक में मुख्य अतिथि राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सहप्रभारी चिरंजीवी राव रहे। बैठक में कांग्रेस संगठन को मजबूत करने व हर छोटे से बड़े चुनाव में एकजुट होकर चुनाव लड़ने व जीतने की बात कही। मंचासीन अतिथियों व जनप्रतिनिधियों का कांग्रेस के कार्यकर्ताओ ने माला व साफा पहनाकर स्वागत किया। कांग्रेस कमेटी के सहप्रभारी चिरंजीवी राव ने सम्बोधित करते हुए कहा कि राजस्थान में कांग्रेस ने विपक्ष की भूमिका बखूबी निभाई हैं और यहा हर कार्यकर्ता मजबूत है। कांग्रेस जिलाध्यक्ष दिनेश सुंडा ने बताया कि पालिका पंचायत में उन्ही लोगो को टिकट दी जाएगी जो धरातल पर कांग्रेस पार्टी के लिए काम कर रहा हैं, सिफारिश किसी की नही चलेगी। कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ता प्रदेश भर में अपना मजबूत पक्ष रख रहे हैं। उदयपुरवाटी विधायक भगवानाराम सैनी ने कहा कि बीजेपी ने देश भर में लोगो को डरा धमका कर सता पर काबिज हो रही हैं, लेकिन धीरे धीरे लोग उनके बहकावे में नही आ रहे ओर कांग्रेस पार्टी के पक्ष में वापस आ रहे है और आने वाले चुनावों में कांग्रेस पार्टी बहुमत से जीतेगी। विधानसभा प्रभारी राजेन्द्र गौरा ने कहा कि कांग्रेस का हर कार्यकर्ता पार्टी व अपने हक की लड़ाई लड़ रहा है। साथ ही उदयपुरवाटी में संविधान बचाओ रैली 18 जुलाई को आयोजित करने की बात कही।इस दौरान उदयपुरवाटी केकांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष बीएल सैनी, गुढ़ागौड़जी के राजेन्द्र गिल, नरेश कटारिया,अनिल सैनी, श्रवण सैनी, रघुनाथपुरा सरपंच सजंय नेहरा, पूर्व सरपंच ख्यालीराम, विजयपाल भाटीवाड़ एंव कांग्रेस के पूर्व व वर्तमान पार्षद व सरपंच, पंचायत समिति सदस्य मौजूद रहे।

अतिक्रमण हटाने के नाम पर खानापूर्ति, लौटा प्रशासन

जयपुर टाइम्स

सालासर(निस)। सिद्धपीठ सालासर बालाजी धाम में अतिक्रमण की कार्रवाई को लेकर रविवार को प्रसाशन पहुंचा। लेकिन प्रशासन आंख बंद कर कुम्भकरणी नींद सो रहा है। एसडीएम ओमप्रकाश वर्मा, तहसीलदार राजू बुनकर व बीडीओ रवि कुमार, सालासर थाना अधिकारी सत्यनारायण शर्मा, ग्राम विकास अधिकारी राजेश बेरवाल बड़े लाव लश्कर के साथ सालासर पहुंचे। मंदिर परिसर के पास नो वेंडिंग जॉन से अतिक्रमण हटाने की कारवाई शुरू की गई। लेकिन यह कार्रवाई औपचारिकता के अलावा कुछ साबित नहीं हुई। ठैलों व दुकानों के सामने रखी हुई टैबल व कुर्सियां हटाकर इतिश्री कर ली। इस कारवाई के दौरान बड़ी संख्या में पुलिस बल को साथ रखा गया। लेकिन पक्के अतिक्रमण

की ओर प्रशासन आंख उठाकर नहीं देख पाया। मुख्य बाजार में चंद दिनों पहले दुकानों का पक्का निर्माण किया गया। जिस पर ग्राम पंचायत ने नोटिस चिपकाया था। लेकिन कानून को ठेंगा दिखाते हुए उस नोटिस को फाड़कर माफियाओ नें फेंक दिया गया और रातों रात सामान रखकर दुकान को चालू किया गया। जो प्रशासन सवालों के घेरे में है।

नगरश्री संस्थापक अग्रवाल को किए श्रद्धा सुमन अर्पित

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। लोक संस्कृति शोध संस्थान नगरश्री में शनिवार देर शाम संस्थापक सुबोध कुमार अग्रवाल की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नगरश्री के कार्यकारी अध्यक्ष रामगोपाल बहड़ ने अग्रवाल के चित्र पर पुष्प अर्पित कर किया। कार्यक्रम संयोजक प्रो. कमल कोठारी ने अग्रवाल के जीवन से जुड़े कई प्रसंग सुनाए। इस अवसर पर बृजेन्द्र दाधीच, उमाशंकर शर्मा, शैलेन्द्र माथुर, गुरूदास भारती, कैलाश चौधरी, सुनील भाऊवाला, रमाकान्त अग्रवाल, श्यामसुन्दर शर्मा व रामगोपाल बहड़ ने कहा कि सुबोध कुमार अग्रवाल लोक संस्कृति के ख्यातनाम संवाहक थे। जिन्होंने चूरू जनपद में लोक संस्कृति के अनेक आयामों को कार्यक्रमों के माध्यम से स्थापित कर संरक्षित किया। वे थली क्षेत्र की विलक्षण धरोहर थे। नगरश्री में म्युजियम स्थापना व पुरातात्विक, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक महत्व की सामग्रियों का कालजयी संग्रह किया। वे कवि गीतकार भी थे। चूरू मण्डल के शोधपूर्ण इतिहास की प्रमाणिक सामग्री एकत्रित करना उनका अनूठा योगदान था। इस अवसर पर बाबू पाटिल, अरविन्द शर्मा, नारायण किरोड़ीवाल, लादूराम प्रजापत, विनोद बागला, राकेश गोयल, रमेश पारीक, अमन सारस्वत, विनोद राठी, सुशील शर्मा, कुलदीप गोयल व सुरेश चोटिया सहित बड़ी संख्या में उपस्थित शहरवासियों ने संस्थापक अग्रवाल को पुष्प अर्पित कर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

युवक ने फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या का किया प्रयास

प्राथमिक उपचार के बाद किया रेफर

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तहसील के गांव मेहरासर चाचेरा में एक युवक ने अपने घर के कमरें में फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या करने का प्रयास किया। युवक के शोरगुल करने पर परिजनों ने तुरंत युवक को कमरें में जाकर देखा तो युवक फांसी के फंदे पर लटक रहा था। परिजनों ने तुरंत युवक को फांसी के फंदे से नीचे उतारकर 108 एम्बुलेंस को फोन कर मौके पर बुलाया और युवक को तुरंत राजकीय उप जिला अस्पताल में 108 एंबुलेंस के सहयोग से भर्ती करवाया गया। जहां पर डॉ किशन सिहाग, डॉ चंदन मोठसरा व डॉ संदीप चाहर सहित नर्सिंग टीम ने युवक का प्राथमिक उपचार कर उसे हायर सेंटर बीकानेर रैफर कर दिया। जानकारी के अनुसार गांव मेहरासर चाचेरा का रामस्वरूप पुत्र मोहन राम नायक उम्र 32 साल अपने घर के कमरें में फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर रहा था। जिस पर परिजनों ने तुरंत 108 एंबुलेंस को कॉल किया। जिस पर सूचना पर मौके पर पहुंची 108 एंबुलेंस के पायलेट सुभाष सिहाग व ईएमटी एमटी संजय खीचड़ ने युवक को जल्द ही राजकीय उप जिला अस्पताल पहुंचाया। जिससे युवक की जान बच गई। वहीं राजकीय उप जिला अस्पताल में डॉक्टर व नर्सिंग टीम की ओर से युवक का प्राथमिक उपचार कर उसे बेहतर उपचार के लिए हायर सेंटर बीकानेर रैफर कर दिया।

चलते ऑटो से गहने चुराने वाली 2 महिलाएं गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। झुंझुनूं पुलिस ने ऑटो में गहने चुराने वाली गैंग की 2 महिलाओं को गिरफ्तार किया है। अलवर जिले के माधोसिंहपुरा निवासी दो महिलाओं को जिले की कोतवाली थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया। महिलाओं को ऑटो में यात्रियों के गहने चुराने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। दोनों महिलाओं का एक ही पति है। चोरी की वारदात दोनों मिलकर करती थी। पुलिस ने उनके पास से एक लाख रुपए से अधिक कीमत के गहने बरामद कर लिए हैं। कोतवाली थानाधिकारी हरजिंदर सिंह ने बताया कि गिरफ्तार की गई महिलाओं की पहचान सावित्री (30) और राजोदेवी (40) पत्नी शेर सिंह बावरिया निवासी माधोसिंहपुरा थाना नीमराना जिला अलवर के रूप में हुई है। दोनों महिलाएं सार्वजनिक वाहनों, खासकर ऑटो में सफर कर रहे यात्रियों के बैग से नकदी और गहनों की चोरी की वारदात करती थीं। यह गिरफ्तारी एक अप्रैल में दर्ज मामले की जांच के दौरान हुई। 11 अप्रैल 2025 को मंडावा के भारू गांव निवासी रामनिवास मेघवाल (उम्र 60 वर्ष) ने थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। पीड़ित ने बताया कि वह अपनी पत्नी कमला देवी के साथ झुंझुनूं के एक ज्वेलर्स शोरूम पर गया था, जहां दोनों ने करीब एक लाख रुपए के सोने-चांदी के गहने खरीदे थे। रिपोर्ट के अनुसार रामनिवास और उनकी पत्नी ने गहनों से भरा बैग अपने पास रखा और दोपहर करीब 12.30 बजे ऑटो में बैठकर गांधी चौक के लिए रवाना हुए। प्रभात टॉकीज के पास तीन महिलाएं भी उसी ऑटो में सवार हो गईं। कुछ ही देर में जब दंपती ऑटो से उतरे, तब उन्हें बैग की चैन खुली मिली और भीतर रखे सारे गहने गायब थे। चोरी की इस घटना से दोनों पति-पत्नी हक्के-बक्के रह गए और सीधे थाने पहुंचे। पुलिस ने मामले की जांच शुरू की।

इंटेलेक्चुअल मुस्लिम सोसाइटी, चूरू आयोजित करेगी सम्मान समारोह

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला मुख्यालय पर मौलाना अबुल कलाम आजाद एजुकेशन इंस्टिट्यूट उस्मानाबाद कॉलोनी में इंटेलेक्चुअल मुस्लिम सोसाइटी की आम बैठक आयोजित हुई बैठक की अध्यक्षता भँवर खान ?रिटायर्ड जिला शिक्षा अधिकारी ने की । बैठक में कौम से जुड़े हुए अहम मसलों पर सार्थक चर्चा की गई। इसके अलावा, मुख्य एजेंडा होनहार बच्चों के लिए आयोजित किए जाने वाले प्रतिभा सम्मान समारोह पर विस्तृत विचार विमर्श किया गया। उक्त समारोह रविवार को आयोजित किया जाने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया। सम्मानित होने वाले बच्चों के लिए क्राईटेरिया तय करने का निर्णय इसके लिए गठित कमेटी और अयूब खान आरपी एस की ओर से लिया जाएगा। बैठक में निम्न सदस्य शामिल हुए और अपने अपने विचार रखे। शौकत अली खान झारिया पूर्व एडिशनल कमिश्नर सेल्स टैक्स, डॉक्टर एफएच गोरी वरिष्ठ फिजिशियन, नूर मोहम्मद खान रिटायर्ड एडिशनल कमिश्नर आबकारी, मोहम्मद अयूब खान रिटायर्ड एडिशनल एसपी, मोहम्मद आरिफ खान प्रिन्सिपल, मेनूदिन खान ?चीफ वेलफेयर इंस्पेक्टर रेलवे, हबीब खान, रशीद खान शिक्षाविद, सलीम खान दिलावर खानी, अध्यापक आरिफ खान, अनीस खान, मोहम्मद सदिक खान अध्यापक, रमजान मोहम्मद खान अध्यापक, सलीम खान, मोहसिन खान, मोहम्मद वसीम अली अध्यापक और आसिफ़ खान उपस्थिति हुए। बैठक सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई। आगामी मीटिंग 20 जुलाई 2025 को आयोजित किए जाने की सहमति हुई। डॉक्टर एफ एच गोरी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

आईएडीवीएल ने किया त्वचा रोग चिकित्सा शिविर आयोजित

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। अखिल भारतीय त्वचा रोग विषेशज्ञों के भारतीय त्वचा यौन एवम् कुष्ठ रोग विशेषज्ञ महासंघ (आईएडीवीएल) के तत्वावधान में और राष्ट्रीय जाट महासभा के संयोजन में छापर विश्व त्वचा दिवस के उलपक्ष में स्थित अक्षय कृपा मेडिकल स्टोर पर त्वचा, यौन और कुष्ठ रोग चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन राष्ट्रीय जाट महासभा के प्रदेशाध्यक्ष धर्मेंद्र कीलक, युवा चेतना मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रदीप सुराणा, साहित्यकार डॉ घनश्याम नाथ कच्छावा और वरिष्ठ विशेषज्ञ त्वचा रोग डॉ सुनील मीणा आदि ने किया। इस अवसर पर डॉ. सुनील मीणा का दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय जाट महासभा के प्रदेशाध्यक्ष धर्मेंद्र कीलक ने कहा कि स्वस्थ त्वचा, स्वस्थ शरीर और स्वस्थ राष्ट्र की अवधारणा से आयोजित इस शिविर का क्षेत्रवासियों ने लाभ उठाया। डॉ. सुनील मीणा ने कहा कि त्वचा हमारे शरीर में सबसे ज्यादा पाया जाने वाला अंग है और अगर कोई भी संक्रमण शुरू होता है, तो वो त्वचा के जरिए ही शुरू होता है। इसलिए लोगों में त्वचा रोगों के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से शिविर का आयोजन किया गया है। शिविर में 64 स्थानीय लोगों ने निःशुल्क चिकित्सकीय जांच करवाई। इस अवसर पर नवीन डूडी, कविता शर्मा, डॉ गिरधारी रतावा, राजकुमार प्रजापत, पार्षद सत्यनारायण स्वामी, नानूराम कुल्हरि, छापर जाट समाज के अध्यक्ष भीखाराम डूडी, अशोक कीलका, सीताराम स्वामी, संतोष भंसाली, हेमा दुधोड़िया, विजेंद्र सुराणा, पूसराज सोनी, प्रियंका प्रजापत, पंकज स्वामी सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

हनुमान सेवा समिति की बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। दक्षिण श्मशान की केयरटेकर संस्था हनुमान सेवा समिति की साधारण सभा की बैठक रविवार शाम पांच बजे अध्यक्ष पूनमचन्द गर्ग की अध्यक्षता में आयोजित की गई। जिसमें मुख्य मुद्दे सिद्ध समाज को दी गई भूमि और समिति का लेखा जोखा प्रस्तुत करने के लिए रखी गई। जिसमें कस्बे के सभी लोगों ने श्मशान की भूमि सिद्ध समाज को देने पर सभी ने विरोध दर्ज करवाया। समिति से लेखा जोखा पेश किया। समिति के अध्यक्ष ने कहा कि सभी कस्बे का सिद्ध समाज को भूमि देने पर विरोध के कारण भूमि देने को निरस्त किया जाता है। आगामी 27 जुलाई को समिति साधारण सभा की बैठक में अपना लेखा जोखा प्रस्तुत करेंगे और समिती की नई कार्यकारिणी का गठन किया जाएगा।

मोतियाबिंद जांच व लैंस प्रत्यारोपण शिविर, 325 मरीजों की जांच

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। लायंस क्लब डायमंड व अंधता निवारण समिति जयपुर के संयुक्त तत्वाधान में निशुल्क मोतियाबिंद जांच व लैंस प्रत्यारोपण शिविर स्वर्गीय शारदा देवी व हरिप्रसाद जैसनसरिया की पुण्य स्मृति में प्रदीप कुमार, सुभाष जैसनसरिया के स्थानीय सौजन्य से अर्जुन क्लब राजकीय चिकित्सालय में लगाया गया। शिविर का शुभारंभ प्रदीप कुमार, पवन कुमार, रवि कुमार, सुभाष जैसनसरिया ने फीता काटकर किया। शंकरा आई हॉस्पिटल जयपुर के नेत्ररोग विशेषज्ञ डॉ सृष्टि आर्या, डॉ दीप शिखा ने 325 मरीजों की जांचकर 100 आंखों के मरीजों का ऑपरेशन के लिए चयन किया। मीडिया प्रभारी अंजना भोजक ने बताया की सभी चयनित 100 मरीजों को बस से जयपुर ले जाया गया। जून माह कैंप के ऑपरेशन किये 80 मरीजों को चश्मे भेंट किए गए। भामाशाह प्रदीप कुमार, सुभाष जैसनसरिया ने इस अवसर पर अर्जुन क्लब शहरी चिकित्सालय को 2 कूलर भी भेंट किए। शिविर को सफल बनाने में अध्यक्ष लायन किशोर भारद्वाज, लायन सुशील भोजक, लायन अनिल गोयल, आसकरण सोनी, हंसराज सोनी, मुबारक तुगलक, डॉ पूनमचंद भाटी, घनश्याम बोचीवाल, महेंद्र निर्वाण, देवचंद सोनी, सुभाष जांगिड, कैलाश भाटी, सागर झेंडू, फूसदास स्वामी, सुमन कंवर, गंगाराम सुथार, प्रकाश बुच्चा, राजेश बुच्चा, राजकुमार पांडिया आदि ने शिविर में सहयोग किया।

नेताजी महाराज की बणी में किया पौधरोपण, सार संभाल का लिया संकल्प

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। तहसील क्षेत्र में चल रहे पौधारोपण व हरियालो राजस्थान अभियान के तहत गांव मेलुसर के नेता जी महाराज की बणी मे पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया है। दिव्यांग भंवर लाल प्रजापत के नेतृत्व में पौधरोपण व पर्यावरण बचाने का संकल्प लिया गया। दिव्यांग प्रजापत ने कहा कि पेड़ हमारे जीवन के लिए उतने ही महत्वपूर्ण है जितनी कि हमारी सांसे, इन्हें पेड़ों का मानव ही नहीं बल्कि जीव जंतुओं के जीवन में भी प्रभाव पड़ता है। इन पेड़ों से सब जीवित प्राणी और पशु पक्षियों को आक्सीजन प्रदान करते हैं। इस अवसर पर पर्यावरण प्रेमी नरेश सैनी ने कहा कि पेड़ों से हमारा वातावरण हरा भरा रहता है। इसलिए वर्षा ऋतु में हमें ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने चाहिए। ताकि हमारा पर्यावरण संतुलित रहे। गौ सेवक प्रदीप सैनी ने कहा कि इन पेड़ों का मूल्य हम भूलते जा रहे हैं। हम दिन प्रतिदिन इन पेड़ों को काट रहे हैं। पेड़ों को इस तरह काटते रहने से हमारे जीवन पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है। इस अवसर पर पर्यावरण प्रेमी प्रवीण सैनी, अनिल मायला, दीपक शर्मा, भवानी शंकर पारीक आदि वृक्ष मित्रों

ने काफी मेहनत से बढ़ चढ़कर अपना पूर्ण योगदान दिया। इन पौधों को बचाने के लिए पेड़ों के चारों ओर सुरक्षा घेरा बना दिया है। मंदिर के पुजारी गोपीचंद शर्मा ने इन पेड़ों में नियमित पानी देने का संकल्प लिया। पौधारोपण कार्यक्रम का संचालन गौ सेवक प्रदीप सैनी व पर्यावरण प्रेमी नरेश सैनी की ओर से किया गया।

कांवड़ियों ने बांके बिहारी के किए दर्शन

जयपुर टाइम्स

सीकर(निस)। श्रीआशुतोष कावड़ संघ सीकर से रवाना हुआ कावड़ संघ वृंदावन धाम पहुंचा जहां उन्होंने बांके बिहारी के दर्शन करके शेखावाटी और राजस्थान प्रदेश के समृद्धि, विकास और सुख शांति की कामना की। गणेश अग्रवाल ने बताया कि हर तरफ बोल बम के उदघोष से वातावरण गुंजायमान हो रहा है। यात्रा का नेतृत्व शिवकुमार अग्रवाल, हरिप्रसाद मोदी, विनोद अग्रवाल, पंडित जयपाल इंदौरिया कर रहे हैं सीकर क्षेत्र से बस ट्रेन और हवाई यात्रा से करीब 100 से ज्यादा कावड़िए यात्रा कर रहे है जो सुल्तान गंज से तरन तारिणी पावन गंगा जल लेकर बाबा धाम में कावड़ चढ़ाएंगे। लायंस क्लब सचिव विनोद दाधीच ने बताया कि सभी कावड यात्री बहुत ही उत्साहित है और भगवान शंकर की भक्ति में तल्लीन भजन कीर्तन करते हुए यात्रा कर रहे हैं।

सीकर के मास्टर प्लान 2041 का विरोध, परिवर्तन करने की उठाई मांग

पूर्व सांसद सुमेधानंद व उप जिला प्रमुख धायल को सौंपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

सीकर(निस)। सीकर के मास्टर प्लान 2041 का लगातार ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में विरोध बढ़ता जा रहा है। मास्टर प्लान के विरोध में लगातार अलग-अलग ग्रामीण इलाकों के लोग आपत्तियां दर्ज करवा रहे हैं। वहीं मास्टर प्लान 2041 में ग्राम राधाकिशनपुरा के नला का बालाजी स्थित बालाजी विहार विस्तार कॉलोनी के लोगों ने रविवार को सीकर के पूर्व सांसद स्वामी सुमेधानंद सरस्वती व उपजिला प्रमुख ताराचंद धायल को ज्ञापन देकर बालाजी विहार विस्तार कॉलोनी में मास्टर प्लान 2041 के अनुसार प्रस्तावित सार्वजनिक व अर्धसार्वजनिक उपयोग से हटाकर आवासीय उपयोग में परिवर्तन करवाने की मांग उठाई। स्थानीय लोगों का कहना है कि मास्टर प्लान 2041 में बालाजी विहार विस्तार कॉलोनी को सार्वजनिक व अर्धसार्वजनिक उपयोग (पीएसपीयू) में वर्गीकृत किया गया है जो स्थानीय लोगों के हितों के विरुद्ध है। स्थानीय लोगों का कहना है कि राधाकिशनपुरा इलाके के पिपराली रोड स्थित नला का बालाजी स्थित बालाजी विहार विस्तार कॉलोनी सीकर शहर में यूआईटी के गठन से पूर्व नियमानुसार 2012 में विकसित हुई थी और कॉलोनी में विद्युत बोर्ड से विद्युतीकरण करवाया गया था। बालाजी विहार विस्तार कॉलोनी में 70% आबादी अपना पक्का मकान बनाकर सह परिवार रहती है। इसके साथ ही सहकारिता विभाग राजस्थान सरकार में 2018 में कॉलोनी के विकास के लिए रजिस्टर्ड करवाई गई थी और 2012 से 2025 तक सरकार को काफी मात्रा में कॉलोनी की बसावट से राजस्व की आय भी हुई। हाल ही में प्रस्तावित सीकर के मास्टर प्लान के जारी नक्शे में कॉलोनी को प्रस्तावित सार्वजनिक व अर्धसार्वजनिक उपयोग में शामिल किया गया है। जिसको लेकर स्थानीय लोगों ने नगर परिषद में अपनी आपत्तियां भी दर्ज करवाई है। अगर जल्दी प्रशासन और सरकार स्थानीय लोगों की मांग पर ध्यान नहीं देती है तो इलाके के लोगों की ओर से बड़ा आंदोलन किया जाएगा। जिसकी सारी जिम्मेदारी सरकार और प्रशासन की होगी। इस दौरान तेजसिंह, श्रीराम, कर्मवीर पिलानिया, सुरेश सैनी, अमरचंद, मालीराम, धर्मेंद्र, जुगल सिंह, सीताराम, महावीर, पिंकी कंवर, नरसी लाल, राहुल सिंह, कमोद कंवर, मनोज तारपुरा, गजेंद्र सिंह, राकेश, धूड़ाराम, विक्रम, शिवकरण, सुमन देवी सहित बड़ी संख्या में स्थानीय लोग मौजूद रहे।

कॉलेज में कॅरियर गाइडेंस सेमिनार का आयोजन

जयपुर टाइम्स

सीकर(निस)। जयपुर-बीकानेर बाईपास स्थित प्रिंस कॉलेज सिविल सर्विसेज विंग में कॅरियर गाइडेंस सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के मुख्य वक्ता बीडीओ सुनील ढ़ाका रहे। सेमिनार में सुनील ढाका ने विद्यार्थियों को सिविल सर्विसेज की तैयारी की स्ट्रेटजी व सक्सेस टिप्स दिए। उन्होंने प्रीवियस ईयर क्वेश्चन पेपर्स पर विशेष ध्यान देने के साथ ही न्यूजपेपर रीडिंग, राइटिंग स्किल्स व पर्सनैलिटी ग्रूमिंग का महत्व बताते हुए कॉलेज प्रथम वर्ष से ही इन पर विशेष फोकस करने का आह्वान किया। साथ ही सिविल सर्विसेज के तृतीय चरण साक्षात्कार के टिप्स भी दिए। इस दौरान सिविल सर्विसेज की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों ने कॅरियर व सिविल सर्विसेज से सम्बन्धित अनेक प्रश्न भी पूछे। गौरतलब है कि प्रिंस कॉलेज में स्नातक प्रथम वर्ष से ही विशेष बैच बनाकर आईएएस, आरएएस, एसएससी सीजीएल, सीडीएस आदि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करवाई जाती है। सेमिनार में प्रिंसिपल डा. मनीष यादव, कॉर्डिनेटर अनिल शर्मा, कुलदीप सिंह, महेंद्र जाट, प्रदीप शर्मा सहित समस्त व्याख्याता व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

पृथ्वी और परिवेश के लिए रहें संकल्पितः सुराणा

जिला कलक्टर ने जिले के ढाढर में किया पौधारोपण

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने रविवार को जिले के ढाढर ग्राम पंचायत मुख्यालय स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में ढाढर कर्मचारी सहयोग, विकास व सेवा समिति और विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में "मिशन हरियालो राजस्थान" अंतर्गत पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस अवसर पर जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने कहा कि हम पृथ्वी और परिवेश के लिए संकल्पित रहें। वर्तमान समय में पृथ्वी की रक्षा मानवता के समक्ष एक गंभीर चुनौती है। पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने के लिए हमें प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण व संवर्धन दिशा में समन्वित प्रयास करने होंगे। परिवेश का प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण के लिए अपने दायित्वों को समझे और उनका समुचित निर्वहन करे। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर चर्चा करते हुए कहा कि संतुलित मानव विकास के लिए हमें अपनी पर्यावरणीय जिम्मेदारी को समझना होगा। उन्होंने पौधों की नियमित देखभाल की ज़िम्मेदारी ग्रामवासियों व विद्यालय परिवार को सौंपते हुए पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूक रहने का आह्वान किया। इस अवसर पर यादराम कस्वां, प्रधानाचार्या प्रियंका चौधरी व ग्रामीणों ने जिला कलक्टर का साफ़ा पहनाकर व स्मृति चिह्न भेंटकर अभिनंदन किया। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय परिसर में 625 पौधे रोपित किए गए। इस दौरान ईश्वरराम कस्वां, हरिश चन्द्र, शिवभगवान, भंवरलाल, चिमनाराम कारेल, बजरंगलाल कस्वां, धीरसिंह, मनीराम कस्वां, रूपचंद्र शर्मा, सुखाराम स्वामी, फूलाराम कस्वां, शुभकरण पूनिया, ओमप्रकाश, विजयपाल, दीपचंद, मनोज खारडिया, सुनील खारडिया, नेतराम, केशरराम, लीलाराम नायक, डूंगरराम, खेमचंद कस्वां, इन्द्र कस्वां, भंवरलाल गुर्जर, चिरनलाल, सुभाष कस्वां, हनुमान प्रजापत, लूणाराम, नरेंद्र जांगिड, बिजू पडगड, शिशुपाल कस्वां, किशनाराम, बाबूलाल, रामलाल, काशीराम सिहाग, नंदलाल कस्वां, मनालाल डिलर, ज्ञानाराम नट, श्याना कस्वां, राजबाला कस्वां सहित अन्य ग्रामीणों, विद्यालय स्टाफ व विद्यार्थियों ने सहभागिता दी। संचालन प्रेमचंद वर्मा ने किया।

कृषि व उद्यान विभाग की योजनाओं और कार्यक्रमों की समीक्षा बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(निस)। आत्मा सभागार में रविवार को कृषि व उद्यान विभाग की ओर से संचालित विभिन्न योजनाओं की समीक्षा बैठक कृषि व उद्यानिकी अधिकारियों की उपस्थिति में अतिरिक्त निदेशक कृषि खण्ड संभाग त्रिलोक कुमार जोशी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। संयुक्त निदेशक कृषि कैलाश चौधरी ने बताया कि जिले के किसानों को 100 फॉर्म पोण्ड, 2086 डिग्गीयों पर देय अनुदान से कृषि विभाग की ओर से लाभान्वित किया जाना है, प्रशासनिक स्वीकृति जारी करने की कार्यवाही प्रगतिरत है। इस पर अतिरिक्त निदेशक कृषि जोशी ने निर्देशित किया कि कृषि व उद्यान विभाग दोनों विभिन्न योजनाओं में प्राप्त लक्ष्य अनुरूप यथाशीघ्र प्रशासनिक स्वीकृति जारी कर समय पर किसानों को लाभ दिलवाया जाना सुनिश्चित कराए। उपनिदेशक कृषि जयदीप दोगने ने बताया कि गुण नियंत्रण अभियान के तहत बीज के 12, उर्वरक के 16, पेस्टिसाइड के 5 बकाया केस निरीक्षक की ओर से दर्ज करवाए जाने हैं, संबंधित निरीक्षक केस दायर करने की कार्यवाही शीघ्र कराए। सहायक निदेशक उद्यान मुकेश गहलोत ने बताया कि हरियालो राजस्थान कार्यक्रम के तहत कृषि विभाग की ओर से 26800 व उद्यान विभाग की ओर से 42000 पौधों का पौधरोपण करवाया जाना है। इस पर अतिरिक्त निदेशक कृषि जोशी ने निर्देशित किया कि जुलाई माह में ही पौधारोपण का शत प्रतिशत लक्ष्य पूर्ण कर लिया जाए, किसानों के खेतों पर पौधारोपण के साथ ही उद्यान विभाग को आवंटित 75 हैक्टेयर फल बगीचा स्थापना के फल वृक्ष भी हरियालो राजस्थान में स्थापित करवाना सुनिश्चित करें। बैठक में किसान सेवा केंद्र व कस्टम हायरिंग सेंटर के सुदृढ़ीकरण पर भी व्यापक चर्चा हुई। समीक्षा बैठक में संयुक्त निदेशक कृषि कैलाश चौधरी, परियोजना निदेशक आत्मा मदनलाल, उपनिदेशक जयदीप दोगने, रेनू वर्मा, सहायक निदेशक मुकेश गहलोत, रघुवर दयाल सुथार, राजूराम डोगीवाल, मानाराम जाखड़, कृषि अधिकारी सोमेश तंवर, कविता गुप्ता, महेंद्र प्रताप, मेघराज बंजारा, संगीता मेहता, मीनाक्षी पंवार, विजय कुमार, जोधराज इत्यादि उपस्थित रहे।

गौशाला चेलासी में गायों को चारा गुड़ खिलाया

जयपुर टाइम्स

सीकर(निस)। सालासर रोड स्थित श्री करणी माता गौशाला चेलासी में रविवार को गोपीनाथ गौ सेवा समिति के तत्वाधान में गो स्वामणी कार्यक्रम हुआ। समिति की संरक्षक गौ सेविका ज्योति तनवानी ने बताया कि गौ माता को हरा चारा, तिल पपड़ी, गोंद के लड्डू, खल चुरी, रोटी का भोग लगाया गया। समिति के अध्यक्ष शैलेश जैन समिति की संरक्षक ज्योति तनवानी क़ो विश्व स्तरीय गो चिकित्सालय नागौर की कामधेनु सेना की राजस्थान प्रदेश उपाध्यक्ष बनाए जाने पर गोपीनाथ गौ सेवा समिति की तरफ से दुपट्टा पहनाकर एवं मोमेंटो, बधाई दी गई। गौशाला में पधारे हुए सभी गो भक्तो गोपीनाथ राजा का चित्र भेंट कर और दुपट्टा पहनाकर आभार व्यक्त किया। इस सेवा कार्यक्रम में ज्योत्स्ना कुमावत, सुमित्रा शर्मा, वैष्णवी कुमावत, लक्ष्मी कुमावत, कैलाश झाझूका, यश जांगिड़, शुभम जांगिड़, सुमित कुमावत, अमित जोगानी, प्रेमाराम गुर्जर, रामदेव भूरिया, लक्ष्मण राम बुरड़क, झाबर सिंह बुरड़क, रामचंद्र पचार आदि गोपीनाथ गौ सेवा समिति के सदस्य व गौशाला पदाधिकारी उपस्थित रहे।

पांचवी तांग-था रेफरी एंड ट्रेनिंग सेमिनार का भव्य शुभारंभ

जयपुर टाइम्स

बगड़(झुंझुनूं),। बगड़ स्पोर्ट्स जॉन एकेडमी के सानिध्य में पाँचवां तांग-था रेफरी एंड ट्रेनिंग सेमिनार का शुभारंभ आज समारोहपूर्वक हुआ। दो दिवसीय यह सेमिनार 12 और 13 जुलाई को आयोजित किया जा रहा है, जिसमें राजस्थान के 25 जिलों से 200 से अधिक खिलाड़ी भाग ले रहे हैं। एकेडमी के डायरेक्टर राकेश सैनी ने बताया कि इस सेमिनार का उद्देश्य खिलाड़ियों और प्रशिक्षकों को राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं के लिए बेहतर दिशा-निर्देश व नियमों की जानकारी देना है। उन्होंने बताया कि सेमिनार के सफल आयोजन के बाद निकट भविष्य में राज्य स्तरीय तांग-था प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा, जिसमें पूरे राजस्थान से खिलाड़ी भाग लेंगे। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि झुंझुनूं के पुलिस अधीक्षक देवेंद्र सिंह राजावत रहे। वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला सूचना व जनसंपर्क अधिकारी हिमांशु सिंह उपस्थित रहे। विशेष अतिथि के तौर पर राजस्थान सचिवालय से मुख्य खेल अधिकारी मालती चौहान, तांग-था फेडरेशन ऑफ इंडिया के महासचिव विनोद शर्मा, राजस्थान तांग-था एसोसिएशन से सचिव ललिता कुच्छल, कोमल कंवर, सुनीता सैनी, उमेद सिंह, बृजराज सिंह, मुकेश योगी, ओमप्रकाश, रिंकू सैनी, नितिन राठौड़, रजनीकांत शर्मा, गुरुदेव सैनी और पवन जागिड़ उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान खिलाड़ियों में जबरदस्त उत्साह देखा गया और विशेषज्ञों की ओर ले उन्हें नियमों, तकनीकों व खेल भावना के महत्व पर विस्तार से प्रशिक्षण दिया गया।

अग्रवाल समाज समिति की बड़ी पहलः पर्यावरण, शिक्षा और सामाजिक उत्थान को प्राथमिकता

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। अग्रवाल समाज समिति ने सामाजिक सरोकारों को निभाते हुए पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं, साथ ही शिक्षा और कमजोर तबके के उत्थान के लिए भी अहम घोषणाएं की हैं। नव नियुक्त अध्यक्ष गणेश हलवाई ने अपने आगामी कार्यकाल की प्राथमिकताओं का खुलासा करते हुए समाज के जरूरतमंदों को सशक्त करने का संकल्प लिया। झुंझुनूं में अग्रवाल समाज समिति ने एक नई दिशा में कदम बढ़ाते हुए सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वहन किया है। समिति के नवनियुक्त अध्यक्ष गणेश हलवाई ने रविवार को अपने आगामी कार्यकाल की प्राथमिकताएं सार्वजनिक कीं, जिनमें पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा को बढ़ावा देना और समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों का उत्थान शामिल है। अध्यक्ष गणेश हलवाई ने घोषणा की कि अब समाज के जरूरतमंद विद्यार्थियों को शिक्षा के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ेगा। भामाशाहों के सहयोग से उन्हें छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी, ताकि आर्थिक तंगी के कारण किसी की पढ़ाई अधूरी न रहे। उन्होंने यह भी बताया कि समाज की आर्थिक रूप से कमजोर बेटियों के विवाह में सहायता करना भी उनकी प्रमुख प्राथमिकता होगी। हलवाई ने जोर दिया कि अग्रवाल समाज देश की राजनीति, अर्थव्यवस्था और व्यापार में हमेशा अग्रणी रहा है, ऐसे में समाज के कमजोर तबके को ऊपर उठाने का दायित्व भी हमारा ही है। सावन माह के उपलक्ष्य में समिति ने रविवार को अग्रसेन भवन में एक विशेष पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस पहल में समाज के प्रमुख भामाशाहों–विवेक केजरीवाल (पुत्र ओमप्रकाश केजरीवाल), नवीन केजरीवाल और जय बजरंग टिंबर एंड हार्डवेयर मर्चेंट–के सहयोग से 2100 पौधे वितरित किए गए।

हरियालो राजस्थान के तहत किया पौधारोपण

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(निस)। हरियालो राजस्थान के तहत रविवार को समता नगर के नागरिकों ने श्रीगंगानगर रोड से लेकर करणी नगर तक सघन पौधारोपण किया। स्थानीय नागरिकों ने अपने दिवंगत परिजनों की स्मृति स्वरूप पौधों को गोद लेकर उनके पालन पोषण का दायित्व लिया। कार्यक्रम में सार्वजनिक निर्माण विभाग के मुख्य अभियंता जसवंत खत्री ने एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधारोपण कर प्रदेश में पौधारोपण और जल संरक्षण की सुदृढ़ परंपरा और पर्यावरण चेतना को संस्कृति का आधार बताया। कार्यक्रम में अशोक वासवानी, रामचंद्र धारणिया, बालकिशन पडिहार, हर्ष कंसल, श्रीभगवान अग्रवाल, संजय गोदारा, श्याम भाटी, रतन सिंह शेखावत, राजेश चौधरी, प्रो. अन्ना राम शर्मा, शिव सारस्वत, उम्मेदसिंह राजपुरोहित, महेंद्र दुसाद, प्रमोद अग्रवाल, अनिल अग्रवाल, कृतेश जैन, महेंद्र सिंह राजपुरोहित, रमेश पारीक, बनवारी लाल खंडेलवाल, मनोहर लाल, रामचंद्र अग्रवाल सहित बड़ी संख्या में महिलाओं और बच्चों ने भाग लिया।

आरोग्य समिति व आयुष्मान आरोग्य मन्दिर की बैठक संपन्न

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। गुसांईसर के राजकीय आयुर्वेद औषधालय अंतर्गत आरोग्य समिति की बैठक शनिवार को कार्यकारी अध्यक्ष वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी लक्ष्मी नारायण शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। समिति के सदस्य सचिव लीलाधर शर्मा वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी ने बताया कि समिति के संविधान अनुसार पंजीकृत संस्था की इस वित्तीय वर्ष की प्रथम त्रैमासिक बैठक रखी गई। सदस्य सचिव शर्मा ने समिति का आय व्यय विवरण प्रस्तुत किया। औषधालय व आयुष्मान आरोग्य मंदिर की गतिविधियों की प्रगति से अवगत करवाया। शर्मा ने बताया कि आयुष्मान आरोग्य मंदिर व औषधालय में गुणवत्तापूर्ण और कारगर औषधियों सरकार की ओर से प्राप्त हुई हैं। औषधालय परिक्षेत्र के अधिकाधिक लोगों को आयुष पद्धति की सुविधाए लेने के लिए प्रेरणा करने के लिए प्रस्ताव रखा। कार्यकारी अध्यक्ष की 31 जुलाई को सेवानिवृत्ति है। अतः नवीन उपाध्यक्ष नियुक्त करने का प्रस्ताव भी रखा। इस अवसर पर लक्ष्मी नारायण शर्मा का आरोग्य समिति की ओर से सम्मान किया गया। औषधालय व आयुष्मान आरोग्य मंदिर प्रभारी सदस्य सचिव शर्मा ने बताया टीम की ओर से फैमिली इंपैलनमैट सर्वे का कार्य फरवरी माह से प्रारंभ कर दिया गया है। कैचमेंट एरिया के 30-65 वर्ष के लोगों का एनसीडी स्क्रीनिंग व नैदानिक परीक्षण, समुदाय में नोन कोम्यूनिकेबल डिजीज की रोकथाम व समय पर निदान कर उचित चिकित्सा या आवश्यकतानुसार उचित चिकित्सा संस्थान पर रैफर करने का कार्य किया जाता है। आयुष्मान आरोग्य मंदिर अंतर्गत ए एन एम, आशा टीम की माह मे एक बैठक की जाती है जिसमें गत बैठक में वितरण किए। फैमिली फोल्डर व सी बैक फार्म जांच करके जमा किए जाते हैं, और आगामी माह के सर्वे के लिए प्रपत्र दिए जाते हैं। इसी दिवस को आ. आ. मं. टीम की मासिक बैठक भी रखी गई जिसमें संबंधित कार्य संपादन भी किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य गोपाल प्रसाद महर्षि, जगदीश प्रसाद शर्मा, धूड़ाराम प्रजापत, राजेन्द्र झिकनाड्या, रक्षा कत्थक पंच, ए एन एम, आशा सुबीता देवी, नेमा देवी, सरोज, प्रतिभा कुमारी, लोकेश कुमार(यो. प्र.) पुष्पा कुमारी (यो. प्र. म) आदि उपस्थित रहे।

औषधालय के वरिष्ठ कम्पाउंडर राकेश कुमार बड़जाती ने बैठक की व्यवस्था की व कार्यवाही लिखित की। कार्यकारी अध्यक्ष ने समिति की कार्यवाही व आयुष्मान आरोग्य मंदिर की प्रगति को प्रशंसनीय बताया और सजगता से कर्तव्य पालन के लिए औषधालय स्टाफ की सराहना की।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।